इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

नई दिल्ली

अंतर–विषयक एवं परा–विषयक अध्ययन विद्यापीठ **बीपीवाईसी–134**

पाश्चात्य दर्शनः आधुनिक

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

अंतरविषयक एवं परा–विषयक अध्ययन विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

प्रो. वी. टी. सेबस्टियन
विजिटिंग प्रोफेसर, जेएनयू
एवं आचार्य (दर्शनशास्त्र),
पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़

डॉ. रूपलेखा खुल्लर
दर्शनशास्त्र विभाग,
जानकी देवी स्मृति
महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. सुद्न्या कुलकर्णी
दर्शनशास्त्र विभाग,
जानकी देवी स्मृति
महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. मीता नाथ
दर्शनशास्त्र विभाग,
रामजस महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. अमित कुमार प्रधान,
दर्शनशास्त्र विभाग,
रामजस महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. गरिमा मणि त्रिपाठी,
दर्शनशास्त्र विभाग,
माता सुन्दरी महिला
महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. बिन्स सेबस्टियन
दर्शनशास्त्र विभाग,
सेन्ट स्टीफेन्स महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. सुमेश एम. के.
दर्शनशास्त्र विभाग,
कला संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. विजय कुमार,
दर्शनशास्त्र विभाग,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी
महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सुश्री प्रियम माथुर, परामर्शदाता (दर्शनशास्त्र), एसओआईटीएस, इग्नू

एसओआईटीएस अकादमिक सदस्य

प्रो. नन्दिनी सिन्हा कपूर, प्रो. बी रुपिणि, प्रो. शुभांगी वैद्य, डॉ. सदानन्द साहू

पाठ्यक्रम निर्माण दल

खण्ड	इकाई लेखक	इकाई अनुवादक
खण्ड 1 आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के पूर्वगामी		
इकाई 1 आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का परिचय	रेखा बासु	डॉ. भरत भारती
इकाई 2 पुनर्जागरण	डॉ. कीथ डि'सूज़ा	आनन्द रवि
इकाई 3 प्रबोधन	डॉ. कीथ डि'सूज़ा	आनन्द रवि
खण्ड 2 बुद्धिवाद		
इकाई 4 देकार्त	डॉ. हेनरी कोडुकुथियिल	आनन्द रवि
इकाई 5 स्पिनोज़ा	डॉ. अनीश चक्रवर्ती	डॉ. मंजुला सक्सेना
इकाई 6 लाइबनीज़	डॉ. सुधा गोपीनाथ	आनन्द रवि
इकाई 7 बुद्धिवाद की आलोचनाएं	डॉ. प्रियदर्शी जेटली	आनन्द रवि
खण्ड 3 अनुभववाद		
इकाई 8 लॉक	डॉ. जलालु हक	वेदप्रकाश सिंह
इकाई 9 बर्कले	डॉ. सुधा गोपीनाथ	वेदप्रकाश सिंह
इकाई 10 ह्यूम	प्रो. जोस कन्ननैक्कल	वेदप्रकाश सिंह
इकाई 11 अनुभववाद की आलोचनाएं	प्रो. ऑगस्टीन मंगलथु	वेदप्रकाश सिंह
खण्ड 4 आलोचनात्मक एवं द्वन्द्वात्मक दर्शन		
इकाई 12 काण्ट	डॉ. सजु चकलक्कल	वेदप्रकाश सिंह
इकाई 13 हेगेल	डॉ. रेखा बासु	डॉ. भरत भारती
इकाई 14 मार्क्स	डॉ. जोश अलम्पसेरि	डॉ. कुमकुम चतुर्वेदी

विषय–वस्तु सम्पादक

डॉ. रेखा बासु, दर्शन विभाग, हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

डॉ. श्रद्धा शाह, दर्शन विभाग, हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

डॉ. तरंग कपूर, दर्शन विभाग, दौलतराम महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

विषय–वस्तु सम्पादन (हिन्दी)

डॉ. आशुतोष व्यास, परामर्शदाता, एसओआईटीएस, इग्नू, नई दिल्ली

प्रारूप सम्पादक

प्रो. नन्दिनी सिन्हा कपूर, एसओआईटीएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आशुतोष व्यास, परामर्शदाता, एसओआईटीएस, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक

प्रो. नन्दिनी सिन्हा कपूर, एस ओ आई टी एस, इग्नू, नई दिल्ली

कवर डिजाइन : डॉ. आशुतोष व्यास, परामर्शदाता, एसओआईटीएस, इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री उत्पादन

---

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय–वस्तु

खण्ड 1 आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के पूर्वगामी

इकाई 1 आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का परिचय

इकाई 2 पुनर्जागरण

इकाई 3 प्रबोधन

खण्ड 2 बुद्धिवाद

इकाई 4 देकार्त

इकाई 5 स्पिनोज़ा

इकाई 6 लाइबनीज़

इकाई 7 बुद्धिवाद की आलोचनाएं

खण्ड 3 अनुभववाद

इकाई 8 लॉक

इकाई 9 बर्कले

इकाई 10 ह्यूम

इकाई 11 अनुभववाद की आलोचनाएं

खण्ड 4 आलोचनात्मक एवं द्वन्द्वात्मक दर्शन

इकाई 12 काण्ट

इकाई 13 हेगेल

इकाई 14 मार्क्स

सहायक अध्ययन–सामग्री (हिन्दी भाषा)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम परिचय

यह छह क्रेडिट का मुख्य पाठ्यक्रम है, जोकि "आधुनिक पाश्चात्य दर्शन" अवधारणा और विकास से पाठक को परिचित करायेगा।

आधुनिक दर्शन पाश्चात्य यूरोप और उत्तरी अमेरिका में 17वीं और आरम्भिक 20वीं शताब्दी के मध्य व्यवहार में लाया गया दर्शन था। यह अवधि मौटे तौर पर आधुनिक दर्शन के आरम्भ और अन्त को दर्शाती है। इस पाठ्यक्रम में हम आधुनिक दर्शन की दो प्रमुख विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करेंगे; दृढ़ आधार की निरंतर खोज और विषयीनिष्ठता की ओर दृढ़ घुमाव। पुनर्जागरण, पुनर्सुधार, नये विश्व की खोज, विज्ञान और पूंजीवाद का उदय आधुनिकता के बाह्य (सामाजिक–ऐतिहासिक) निर्धारक हैं, वहीं मानवीय विषयीनिष्ठता (तर्कबुद्धि, स्वतन्त्रता, रचनात्मकता, नवोन्मेष, स्वायत्तता, स्व–प्रतिबिम्बन) असंदिग्धरूप से इसकी आन्तरिक चालक–शक्ति है। यह पाठ्यक्रम 4 खण्ड और चौदह इकाईयों वाला है।

खण्ड 1 "आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के पूर्वगामी" आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के परिचय से आरम्भ होता है और पुनर्जागरण एवं प्रबोधन की व्याख्या ऐतिहासिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोणों के परिप्रेक्ष्य में करता है।

खण्ड 2 "बुद्धिवाद" है। यह खण्ड का आरम्भ बुद्धिवादी दार्शनिकों; देकार्त, स्पिनोज़ा और लाइबनीज़ के दार्शनिक विचारों की चर्चा से होता है और समापन इन दार्शनिकों के कुछ विचारों के आलोचनात्मक मूल्यांकन से होता है।

खण्ड 3 "अनुभववाद" है। यह खण्ड का आरम्भ अनुभववादीवादी दार्शनिकों; लॉक, बर्कले, ह्यूम के दार्शनिक विचारों की चर्चा से होता है और समापन इन दार्शनिकों के कुछ विचारों के आलोचनात्मक मूल्यांकन से होता है।

खण्ड 4 "आलोचनात्मक एवं द्वन्द्वात्मक दर्शन" काण्ट, हेगेल और मार्क्स की रचनाओं में प्रतीत्य आलोचनात्मक एवं द्वंद्वात्मक दार्शनिक उन्नतियों की खोजबीन करता है।

संदर्भ शैली पर टिप्पणी: संदर्भ देने की अनेक शैलियां हैं, विद्यार्थी विभिन्न इकाईयों में विभिन्न संदर्भ शैलियों का प्रयोग पायेगा, जोकि विद्यार्थी को "अंतः–वस्तु" और "अंत–वस्तु" संदर्भ को समझने में सहायक होगा।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

नई दिल्ली

अंतर–विषयक एवं परा–विषयक अध्ययन विद्यापीठ **बीपीवाईसी–134**

खण्ड 1

आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के पूर्वगामी

खण्ड परिचय

पुनर्जागरण (14वीं से 16वीं शताब्दी की अवधि) और प्रबोधन (1650–1800 ई.) यूरोप में संस्कृति, कला, दर्शन, विज्ञान, और गणित में आमूलचूल परिवर्तनों के अग्रदूत रहे। पुनर्जागरण को प्रायः साहित्य, स्थापथ्य, मानवता, और विश्व अर्थव्यवस्था में उन्नतियों से सम्बद्ध किया जाता है। फ्रेंच में, पुनर्जागरण का अनुवाद "पुनर्जन्म", किया जाता है, जिसका तात्पर्य यह है कि कलात्मकता, संस्कृति, और बौद्धिक विचार एवं उत्पादन का स्वर्णिम युग था। इस युग के कुछ प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, विलियम शेक्सपियर, अमाडियस मोज़ार्ट, लियोनार्दो द विंची एवं निकोलस कॉपर्निकस। प्रबोधन काल अन्वेषणों का समय था, लेकिन ये अन्वेषण केवल विज्ञान, गणित और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र तक सीमित थे। यह समय तर्क और तर्कबुद्धि से शासित था, क्योंकि विचारक इस बात से सहमत हो गये कि समाज और प्रकृति एक दैत्याकार मशीन के समान हैं। वैज्ञानिक पद्धति, जोकि वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण पर विश्वास करते हुए पुष्टिकरणीय निष्कर्षों तक अग्रसर होती है, ने खगोलविद्या, दर्शन, चिकित्सा, शरीर–विज्ञान, और रसायन शास्त्र में विकास को प्रेरित किया। यह खण्ड "आधुनिक पाश्चात्य दर्शन" के परिचय के तौर पर है।

इकाई 1, "आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का परिचय" आधुनिक दर्शन की पृष्ठभूमि और प्रमुख धाराओं का संक्षिप्त परिचय है। यह पाश्चात्य यूरोप में आधुनिक दार्शनिक उन्नतियों के परीक्षन का संक्षिप्त सर्वेक्षण है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को दर्शन और आधुनिक विचारों के इतिहास के गहन अध्ययन हेतु पृष्ठभूमि प्रदान करना है।

इकाई 2, "पुनर्जागरण", पुनर्जागरण और पाश्चात्य दर्शन में इसके प्रभाव का सिंहावलोकन प्रस्तुत करता है। बहुधा यह देखने में आता है कि किसी समय का दर्शन उस समय की संस्कृति से सम्बन्धित होता है और उससे उद्भूत होता है। अतः यदि हम "आधुनिक पाश्चात्य दर्शन" के समय को समझना चाहते हैं, तो हमें पुनर्जागरण की प्रचलित संस्कृति को समझने की आवश्यकता है।

इकाई 3, "प्रबोधन" प्रबोधन युग से सम्बन्धित है, जिसे (संस्कृति और धार्मिक परम्परा की बजाय) तर्कबुद्धि को दार्शनिक, वैज्ञानिक और राजनीतिक समस्याओं को सुलझाने हेतु प्राथमिक प्राधिकारी मानने की बढ़ती स्वीकृति से विशेषित किया जाता है। जीवन में तर्कबुद्धि आधारित दृष्टिकोण पुनर्जागरण के युग की समाप्ति की घोषणा थी।

इकाई 1 आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का परिचय*

रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 वैज्ञानिक क्रांति

1.3 बुद्धिवाद/तर्कवाद

1.4 सर आइजैक न्यूटन

1.5 प्रबोधन या नव–जागरण

1.6 उपनिवेशवाद

1.7 अनुभववाद

1.8 पूंजीवाद, व्यक्तिवाद

1.9 वॉल्टेयर, रूसो, फ्रांसीसी क्रांति

1.10 इम्मैनुएल काण्ट

1.11 स्वच्छंदतावाद (रोमांटिसिज्म)

1.12 हेगेल, मार्क्स

1.13 सारांश

1.14 कुंजी शब्द

1.15 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

1.16 बोध प्रश्नों के उत्तर

* डॉ. रेखा बासु, सेवानिवृत्त दर्शन प्राध्यापक, दर्शन विभाग, हिन्दू महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय। अनुवाद– डॉ. भरत भारती, सहायक प्राध्यापक, दर्शन विभाग, देशबन्धु महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के उद्देश्य हैं,

- शिक्षार्थी को पाश्चात्य दर्शन के आधुनिक अवधि के विचारों के उन्नयन की ओर उन्मुख करना,
- बुद्धिवाद, प्रबोधन, उपनिवेशवाद, पूंजीवाद, व्यक्तिवाद, स्वच्छंतावाद, इत्यादि आंदोलनों के अध्ययन के माध्यम से इन उन्नयनों को ढूंढना।

1.1 परिचय

यह पाठ्यक्रम पाठक को पश्चिमी यूरोप में लगभग 1500 से 1800 ई. तक के विचारों के इतिहास से परिचित कराएगा। 'आधुनिक' का अर्थ है 'नया' या 'अप्रयुक्त'। तो सवाल यह उठता है कि इन तीन शताब्दियों में ऐसा कौन सा 'नवीनता' दिखायी दिया, जो पहले कभी नहीं देखा गया था? यह एक संबंधित प्रश्न है, जिसे चुनौती दी जा रही थी या अस्वीकार किया जा रहा था?

खैर, धर्म, अपने रूढ़िवादी संस्करण में, प्रश्न के घेरे में आ गया। जोस कैसानोवा ने 'धर्मनिरपेक्षता' शब्द को सामाजिक आधुनिकीकरण की आवश्यकता के रूप में गढ़ा। सीधे शब्दों में कहें, धर्मनिरपेक्षता एक विश्वास प्रणाली थी जिसमें अर्थव्यवस्था और विज्ञान के साथ–साथ चर्च और राज्य को अलग करना शामिल था। आधुनिक पश्चिमी चिंतन में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विकास था। 1648 * में वेस्टफेलिया की शांति के परिणामस्वरूप राजनीतिक अधिकारियों के प्रभुत्व के लिए पूर्व में सांप्रदायिक नियंत्रण के तहत क्षेत्रों का हस्तांतरण हुआ। एक अन्य संबंधित विकास यह था कि आधुनिक पश्चिमी दर्शन† में मानवतावाद एक परिपक्व विचारधारा बन गया। यह विभिन्न प्रकार की पश्चिमी मान्यताओं, विधियों और दर्शन को संदर्भित करता है जो मानव क्षेत्र पर जोर देता है। अब तक, धर्म ने पश्चिम में बहसों पर एकाधिकार कर लिया था, एक उत्कृष्ट दुनिया में रुचि के साथ, जिसके परिणामस्वरूप मानव ज्ञान के अन्य क्षेत्रों की उपेक्षा हुई। अंत में, आधुनिक युग में व्यक्तिवाद का उदय हुआ। यह आंशिक रूप से पुनर्जागरण का परिणाम था, और आंशिक रूप से प्रबुद्धता के उदार मूल्यों

* वेस्टफेलिया की शांति 1648 में ओस्नाब्रूक और मुन्स्टर के वेस्टफेलियन शहरों में हस्ताक्षरित दो शांति संधियों का सामूहिक नाम है। पवित्र रोमन सम्राट की शक्ति टूट गई, राज्य अपनी भूमि का धर्म निर्धारित कर सकते थे।

† मानवतावाद सबसे पहले डेसिडेरियस इरास्मस (1469–1538) की सोच में प्रकट हुआ था।

का। व्यक्तिगत स्वायत्तता और विशिष्टता पर जोर व्यक्तिवाद के अभिन्न अंग थे। पूर्व–आधुनिक समय में व्यक्ति को या तो एक विश्वासी ईसाई या एक राजनीतिक विषय के रूप में माना जाता था। व्यक्तिवाद का उदय सामूहिक हितों के विपरीत स्व–हितों की खोज पर एक अतिरिक्त प्रकाश डालता है।

सुधार

इस युग की एक मुख्य विशेषता रूढ़िवादी धर्म, यहाँ, ईसाई धर्म के साथ इसकी आलोचनात्मक जुड़ाव थी। इस आलोचना के साथ धर्मनिरपेक्षता, मानवतावाद, वैज्ञानिक स्वभाव, व्यक्तिवाद, प्रगति में विश्वास और ज्ञान, संशयवाद और औचित्य के मुद्दों पर अधिक ध्यान देने के आदर्श उभरे। इन आदर्शों पर इस इकाई में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

आधुनिक पश्चिमी दर्शन का वाक्यांश मध्य युग* के धार्मिक पूर्वग्रहों पर पुनर्विचार का परिणाम है, यह रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकार की अस्वीकृति को दर्शाता है। चर्च के पास पूर्ण शक्ति थी और उसने राज्य के मामलों में दखल देना शुरू कर दिया था। सुधार, जैसा कि विद्रोहियों द्वारा इस आंदोलन को कहा जाता था, आम तौर पर 1517 में शुरू हुआ माना जाता है, जब मार्टिन लूथर, एक भिक्षु और एक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, ने विटेनबर्ग में केस्टल चर्च पर अपने पंचानबे शोधों को पोस्ट किया, जिसमें मूल रूप से सुधारों के लिए तर्क दिया गया था। चर्च सुधारकों, जिन्हें प्रोटेस्टेंट कहा जाने लगा, ने पोप के अधिकार के साथ–साथ उस समय के कैथोलिक धर्म के कई सिद्धांतों और प्रथाओं को खारिज कर दिया। सुधार ने मध्ययुगीन दर्शन का खंडन किया और इसके स्थान पर एक 'प्रोटेस्टेंट नैतिकता' की स्थापना की। प्लेटो और अरस्तू, कई अन्य लोगों के बीच, पुनर्जागरण के दौरान पुनर्जीवित हुए, उन ब्रह्माण्ड विज्ञानों के लिए निंदा की गई, जिनका उन्होंने प्रतिनिधित्व किया और सापेक्ष विस्मरण में डूब गए। आधुनिक पश्चिमी दर्शन क्षितिज पर एक नए विज्ञान के अग्रदूत के रूप में उभरा†।

यह मान लेना आसान होगा कि मध्य युग के दौरान वैज्ञानिक गतिविधि रुकी हुई थी, जाहिर तौर पर विज्ञान, जैसाकि इस युग में हर दूसरा बौद्धिक अनुशासन पनपा था, हालांकि, यह धर्मशास्त्र के अधीन था और धर्म के दरबार में खुद को सही ठहराने की उम्मीद की गई थी। उदाहरण के लिए, पोलिश खगोलशास्त्री निकोलस कोपरनिकस ने टॉलेमिक भौतिकी को

---

* वाक्यांश 'मध्य युग' आमतौर पर यूरोप में 476 ई में रोम के पतन और 14 वीं शताब्दी में पुनर्जागरण की शुरुआत के बीच की अवधि को संदर्भित करता है।

† यहाँ जिन परिवर्तनों पर चर्चा की जा रही है, वे उत्तर मध्य युग से पुनर्जागरण के माध्यम से और अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में क्रमिक थे। इसके अलावा, इतिहास में किसी भी युग में कोई साफ–सुथरा तरीका नहीं था। इसलिए, यूरोप में 'आधुनिक' युग के भीतर ईसाई छवियों और रूपकों के निरंतर प्रसार से हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

विस्थापित कर दिया, जिसने पृथ्वी को सौर मंडल के केंद्र के रूप में माना था। उन्होंने अकाट्य प्रमाण दिया कि सूर्य केंद्र था, और यह कि पृथ्वी स्थिर नहीं थी, बल्कि सूर्य के चारों ओर घूम रही थी। यह सिद्धांत मध्ययुगीनवादियों के लिए अभिशाप था क्योंकि इसने यांत्रिकी के उनके विचार को कमजोर कर दिया था। चर्च के क्रोध के डर से कोपरनिकस ने अपने काम की छपाई में देरी की।

सुधार का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह था कि, चूंकि चर्च के सार्वभौमिक अधिकार को ध्वस्त कर दिया गया था, इसने राजा के शासन के तहत क्षेत्रीय राज्य को मजबूत किया। यह आने वाले समय का एक संकेत था क्योंकि यूरोप के राजनीतिक भविष्य ने स्वतंत्र, संप्रभु राष्ट्र–राज्यों के रूप में आकार लेना शुरू कर दिया था।

फिर भी सुधार का एक और ठोस प्रभाव एक मध्यम वर्ग का उदय था। यह भी आधुनिक पूंजीवाद की शुरुआत का परिणाम था। नैतिक अवमानना को आमंत्रित करने के लिए धन का संचय बंद हो गया, इसे पृथ्वी पर भगवान के उद्देश्य की पूर्ति के रूप में माना जा रहा था। अंत में, एक लेखक के खिलाफ विद्रोह इरिटियन चर्च के परिणामस्वरूप एक निश्चित मात्रा में धार्मिक व्यक्तिवाद आया, और यह विचारधारा धीरे–धीरे अन्य क्षेत्रों में फैल गई।

1.2 वैज्ञानिक क्रांति

आधुनिक दर्शन विज्ञान के उदय के साथ ही शुरू माना जा सकता है। यहां हर्बर्ट बटरफील्ड द्वारा की गई टिप्पणियों का हवाला देना उचित है। वह लिखते हैं, (वैज्ञानिक क्रांति) ''ईसाई धर्म के उदय के बाद से सब कुछ बेहतर है और पुनर्जागरण और सुधार को केवल एपिसोड के रैंक तक कम कर देता है।''* वैज्ञानिक क्रांति ने मानव विचार को फिर से परिभाषित किया। मानव सोच में इस पुनर्विन्यास ने उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत के आसपास औद्योगिक क्रांति में अपनी अभिव्यक्ति पाई। मध्ययुगीनवादी दुनिया को एक दैवीय आदेश द्वारा सृष्टि के रूप में देखने की प्रवृत्ति रखते थे। आधुनिकतावादी ने इसे यांत्रिक रूप से संचालित होने वाली घटनाओं की दुनिया के रूप में माना। जब गैलीलियो गैलीली (1564–1642) ने सार्वजनिक रूप से कोपर्निकन खगोल विज्ञान के लिए समर्थन की घोषणा की, तो उन्हें चर्च से फटकार मिली। यहां तक कि उनके प्रसिद्ध आविष्कार, दूरबीन को भी

आओ विचार करें –I

आधुनिक पाश्चात्य विचार में एक नई भौतिकी का साक्ष्य हुआ; मनुष्य बनाम प्रकृति का विचार। इसकी तुलना मध्यकालीन विज्ञान से कीजिए जिसका विचार है कि विश्व एक "सृष्टि" है।

* हर्बर्ट बटरफ़ील्ड, *द ओरिजिन ऑफ़ मॉडर्न साइंस*, न्यूयॉर्क, 1952, पृ. 8.

संदेह की नजर से देखा गया क्योंकि यह पादरियों द्वारा आयोजित खगोल विज्ञान की समझ के खिलाफ था। गैलीलियो को किसी भी तरह से कोपरनिकन प्रणाली से जुड़ने की हिम्मत करने पर यातना की धमकी दी गई थी। टस्कनी की ग्रैंड डचेस क्रिस्टीना को लिखे एक पत्र में, उन्होंने लिखा, ''मुझे लगता है कि प्राकृतिक समस्याओं की चर्चा में, हमें शास्त्र के स्थानों के अधिकार पर नहीं, बल्कि समझदार प्रयोगों और आवश्यक प्रदर्शनों पर शुरू करना चाहिए।''*

पादरियों और वैज्ञानिकों के बीच इस टकराव का एक ठोस परिणाम यह था कि आधुनिक भौतिकी द्वारा 'अरिस्टोटेलियन आकाश की अवधारणा' को निरस्त कर दिया गया था। अरस्तू के अनुसार, आकाशीय पिंड पदार्थ से नहीं बने थे, उन्हें पृथ्वी से उच्च कोटि का माना जाता था। नए, उभरते हुए विज्ञान ने इस धारणा को चुनौती दी क्योंकि दोनों का अध्ययन करने के लिए समान कानून तैयार किए गए थे। आधुनिक समय के शुरुआती चिंतक जैसे बेकन, हॉब्स और देकार्त विज्ञान द्वारा की गई इन प्रगति से प्रेरित थे।

1.3 बुद्धिवाद

1.3.1 रेने देकार्त

दर्शनशास्त्र के इतिहासकारों द्वारा रेने देकार्त (1596–1650) को 'आधुनिक दर्शन के जनक' वाक्यांश से सम्मानित किया गया है। देकार्त का पालन–पोषण एक जेसुइट सेमिनरी में हुआ था, और उसने विज्ञान और गणित में काफी दक्षता हासिल कर ली थी।† एक धार्मिक संस्थान में उनका प्रारंभिक प्रशिक्षण उनके लेखन पर एक रचनात्मक प्रभाव के रूप में उनके साथ रहना था। गैलीलियो के रोमांचक निष्कर्षों के उजागर में, देकार्त ने दिखावे की गिरावट, और ज्ञान का विस्तार करने के लिए हमारी सापेक्ष निर्भरता पर प्रतिबिंबित किया। कोपरनिकस, केप्लर और गैलीलियो द्वारा विकसित सिद्धांतों के रूप में 'नया विज्ञान' कहा जाता था, जिसके परिणामस्वरूप दृश्य दुनिया में इंद्रियों के साक्ष्य का क्षरण हुआ। सूरज नहीं हिलता था, पृथ्वी चलती थी, गैलेक्सी ने पहले कभी नहीं सुने रहस्यों को सुलझाया, संक्षेप में, अदृश्य दुनिया, जिसमें परमाणु शामिल थे, चर्च के रूढ़िवादी ब्रह्मांड विज्ञान से टकरा गए। फिर भी एक और मामला जिसने डेसकार्ट की कार्यप्रणाली पर ठोस प्रभाव डाला, वह था यूरोप में सतत धार्मिक युद्ध। उनका मानना था कि तर्क/बुद्धि पीड़ित मानवता को धर्म के नाम पर इस जुझारूपन से बाहर निकलने का रास्ता दे सकता है।

---

* सी एफ एडविन आर्थर बर्ट, *द मेटाफिजिकल फ़ाउंडेशन ऑफ़ मॉडर्न फिजिकल साइंस*, पृ. 72.

† जेसुइट यीशु के समाज के सदस्य थे, जो एक रोमन कैथोलिक आदेश था।

देकार्त द्वारा उन्नत एक क्रांतिकारी थीसिस बौद्धिक स्वायत्तता की आवश्यकता के बारे में थी। उन्होंने सामान्य ज्ञान के आधार पर ज्ञान को अक्सर निरर्थक बताया। उनके दर्शन का उद्घाटन क्षण यह मांग थी कि हम में से प्रत्येक स्वतंत्र रूप से सत्य के लिए प्रयास करता है, तर्क के आधार पर, सनकी अधिकार, परंपरा या अनुभव द्वारा मध्यस्थता। उन्होंने एक ऐसे प्रमाण की खोज पर जोर दिया जिसमें गणितीय प्रमाण की विशेषता हो। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने संदेह की विधि का आविष्कार किया। संदेहवाद, या बिना किसी संदेह के सिद्ध होने तक सहमति को रोकना, उनके तर्कवाद का मार्गदर्शक आदर्श बन गया।

निर्विवाद सत्य की खोज ने देकार्त को कटौती की विधि के उपयोग के लिए प्रेरित किया। इसका तात्पर्य कुछ स्वयंसिद्धों के अस्तित्व से है जो स्वयं स्पष्ट हैं। इन से ज्ञान के अन्य सिद्धांतों का अनुमान लगाया जाना चाहिए। उन्होंने जिस सिद्धांत को निर्विवाद रूप से स्थापित किया वह प्रसिद्ध दावा था ''मै सोचता हूं, इसलिए मैं हूं।'' इसे विद्वानों द्वारा 'एक आत्म–साक्षी विषयवाद' कहा जाता है। भले ही मुझे एक दुष्ट प्रतिभा ने मूर्ख बनाया हो, फिर भी मुझे मूर्ख बनने के लिए मौजूद रहना चाहिए। एक बार जब देकार्त ने अपने संदेह का समाधान कर लिया, तो वह ईश्वर के अस्तित्व को साबित करने के लिए आगे बढ़ता है, और फिर, एक बार यह स्थापित हो जाने के बाद, बाहरी दुनिया का अस्तित्व को साबित करने का प्रयास करते हैं।

क्या संदेह का तरीका हमारे अनुभव के खिलाफ आक्रोश था? क्या कुछ ज्ञान की खोज अवास्तविक थी? मिशेल डी मॉन्टेन (1533–1592), एक फ्रांसीसी विचारक, जो अपेक्षाकृत अज्ञात और इतिहासकारों द्वारा प्रसिद्ध नहीं थे, ने सत्य को खोजने की मानवीय क्षमता पर संदेह किया था। अपरिवर्तनीय और निरपेक्ष सत्य के लिए देकार्त के प्रयास के विपरीत, मॉन्टेग्ने मानवीय विश्वास की आकस्मिकता से मोहित थे। हालांकि, व्यक्तिपरकता के बारे में प्रवचन शुरू करने का श्रेय देकार्त को जाता है। जाहिर है, यह एक बहुआयामी शब्द है, जिसका अर्थ है 'आंतरिक स्थान', 'आत्मनिरीक्षण', साथ ही 'केवल राय' या 'व्यक्तिगत विश्वास'। बेशक, देकार्त का इरादा इसे अ–सापेक्ष के रूप में नियोजित, और एक 'नींव' के संकेत के रूप में करने का था। महत्वपूर्ण रूप से, विषय के भावात्मक और रचनात्मक अर्थ, जिसका अर्थ है कि भावनाओं, या पूर्वाग्रहों, या भावनाओं के उलटफेर से पीड़ित विषय की धारणा, देकार्त की स्पष्ट तर्कवादी स्थिति द्वारा पूरी तरह से खारिज कर दी गई थी।

देकार्त ने निस्संदेह व्यक्तिपरकता की विरासत को पीछे छोड़ दिया जिसे व्यक्तिवाद के तर्क के रूप में विनियोजित किया गया था। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह कोजिटो विचार का केंद्र था। आखिरकार वह एक व्यक्ति को मन और शरीर के एक यौगिक के रूप में देखने लगा। इस द्वैतवाद ने पश्चिम में विचार पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ा। ऐसी परंपराएं थीं जिन्होंने इस आधार को समस्याग्रस्त के रूप में आलोचना की, कुछ अन्य थे जो द्वैतवादी गाड़ी पर सवार

हो गए क्योंकि इसने वैज्ञानिकों के लिए भौतिक दुनिया को मुक्त कर दिया, जबकि मन ने सदियों से काफी विस्तार हासिल किया, जिसे अब एक आत्मा के रूप में, एक राजनीतिक विषय के रूप में, स्वतंत्रता के लिए एक साइट के रूप में, और अन्य तरह से तरह देखा जा रहा है।

1.3.2 स्पिनोज़ा और लाइबनिज़

आधुनिक पश्चिमी विचारकों की इस श्रृंखला में अगले दो दार्शनिक थे डचमैन बारूक स्पिनोज़ा (1632–1677) और जर्मन गॉटफ्राइड विल्हेम वॉन लाइबनिज़ (1646–1716)। अपने पूर्ववर्ती देकार्त के तरीके में, स्पिनोज़ा ने उनके दर्शन के पालन में गणित को प्रतिमान के रूप में स्थापित किया। इसके अलावा, उन्होंने केवल एक पदार्थ, ईश्वर की पुष्टि की, और उसमें जो कुछ भी है उसकी समग्रता को महसूस किया। स्पिनोज़ा ने एक तर्कवादी प्रणाली का निर्माण किया जिसमें सब कुछ निहितार्थ के संबंध से जुड़ा हुआ था। इसलिए, ज्ञान में निहित संबंधों की संपूर्ण गठजोड़ की समझ निहित थी, जिसमें से प्रत्येक मानव को एक सीमित हिस्से के रूप में पहचाना जाना था। प्रभावी रूप से स्पिनोज़ा ने एक तर्कसंगत व्यवस्था के बारे में जागरूकता की बात की जिसके केंद्र में ईश्वर था। लेकिन इस ईश्वर तक विश्वास के द्वारा नहीं बल्कि बौद्धिक समझ के द्वारा पहुँचा गया था। इसके अलावा, संभावित ज्ञाता के सामने प्रस्तुत किया जा रहा साक्ष्य एक ज्यामितीय प्रमाण की प्रकृति का है। स्पिनोज़ा द्वारा गढ़ी गई एक मार्मिक अभिव्यक्ति 'ईश्वर का बौद्धिक प्रेम' है, जो एक मौलिक रूप से तर्कवादी अंतर्दृष्टि है कि हम ईश्वर से अविभाज्य हैं।

यह एक पूर्व निष्कर्ष था कि स्पिनोज़ा को एक विधर्मी के रूप में माना जाता था जिसने ईसाई धर्म के खिलाफ ईशनिंदा की थी। एक अंतर्निहित ईश्वर धर्मशास्त्रियों के लिए एक अभिशाप था, निर्माता और निर्मित के बीच का अंतर रूढ़िवादी के लिए आवश्यक था, इसलिए ईसाई धर्म में एक उत्कृष्ट ईश्वर एक आवश्यक सिद्धांत था। भगवान और दुनिया के बीच की दूरी को भंग करके स्पिनोज़ा को एक औपचारिक पूर्व–संचार में फंसाया गया था, जिसका अर्थ था कि उसे अपने यहूदी समुदाय से निकाल दिया गया था। आधुनिक पश्चिमी विचारों में स्पिनोज़ा का एक ठोस योगदान उनकी पुष्टि थी कि ईश्वर से विश्वास के बजाय तर्क के माध्यम से संपर्क किया जा सकता है। जब रूढ़िवाद से संदेह का सामना करना पड़ा कि कोई संभवतः सत्य की एक प्रणाली (अर्थात स्पिनोज़ा की ईश्वर की अवधारणा) से प्रार्थना नहीं कर सकता है, तो स्पिनोज़ा ने कहा है कि तत्वमीमांसा वास्तविकता के बारे में सच्चाई का पता लगाने का एक प्रयास है, अंधविश्वासी की डर को शांत करने के लिए नहीं बनाया गया है ।

लाइबनिज ने देकार्त और स्पिनोजा के इस विचार को चुनौती दी कि यांत्रिकी का संबंध विस्तार, पदार्थ और शरीर से है। उन्होंने इस धारणा पर सवाल उठाया कि विस्तार एक अंतिम

सिद्धांत था जो भौतिकी की केंद्रीय विषय था। इस दृष्टिकोण के स्थान पर, उन्होंने पदार्थ की गति के बजाय बल के रूप में पदार्थ की धारणा की वकालत की। उन्होंने भौतिक संसार को एक सातत्य के रूप में देखा। इसलिए, गति का उपयोग करने के बजाय, जो असंतत था, उन्होंने एक प्रकार के प्रवाह, या एक ड्राइव के पक्ष में तर्क दिया जो यह सुनिश्चित करता है कि गति का एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक बदलाव सुचारू है। इस लिये अनिवार्य बिंदु जो वह घर चला रहा था, वह यह था कि भौतिक विज्ञानी को गति से नहीं, बल्कि असीम रूप से छोटी इकाइयों से निपटना पड़ता है।

इन इकाइयों को लाइबनिज द्वारा 'मोनड' कहा जाता था। प्रत्येक मोनड एक पदार्थ था, जो विचार के संबंध में दूसरों से भिन्न था। लाइबनिज का मानना था कि, शरीर होने के बजाय, चेतन मन थे। उन्होंने हमारे स्वयं के प्रत्यक्ष अनुभव की ओर इशारा किया; हम अपने आप को जीवित होने के रूप में महसूस करते हैं, यह, लाइबनिज के अनुसार, उस जोर या ड्राइव से आता है जो शारीरिक गति और परिवर्तन की नींव पर है। ये मोनड एक दूसरे से भिन्न हैं, इसलिए नहीं कि वे अंतरिक्ष में विभिन्न बिंदुओं पर स्थान प्राप्त करते हैं (यह तर्क लाइबनिज़ का अस्वीकार कर दिया गया है क्योंकि मोनड अंतरिक्ष में पाए जाने वाले भौतिक बिंदु नहीं हैं) बल्कि इसलिए कि उनके अलग–अलग विचार हैं। तो, लाइबनिज एक ब्रह्मांड की कल्पना करता है जिसमें विभिन्न व्यक्तियों की एक विशाल सभा होती है, जो चेतना के विभिन्न स्तरों पर काम करती है। यह चेतनाओं के बीच एक पदानुक्रम का संकेत है, चेतना की डिग्री, या आत्म–चेतना मोनडों के बीच एक समान नहीं है। प्रत्येक मोनड ब्रह्माण्ड को अपने अनूठे तरीके से प्रतिबिंबित करता है, मोनडों के बीच बातचीत से इंकार किया जाता है। एक घड़ीसाज़ लिबनिज़ की सादृश्यता को अपनाने से ईश्वर में आ जाता है जो विभिन्न मोनडों की विविध धारणाओं और अनुभवों के बीच एक पूर्ण सामंजस्य बनाए रखता है।

जैसा कि मैंने पहले देखा था, तर्कवाद को केवल तर्क द्वारा निर्देशित होने के रूप में देखना मूर्खता होगी, या अनुभववाद केवल इंद्रिय अनुभव के साथ काम कर रहा है। लाइबनिज एक ऐसे विचारक का आदर्श उदाहरण है जो अरस्तू (एन्टेलेची / थ्रस्ट की धारणा) और धर्मशास्त्र (कई मोनडों द्वारा लोगों की दुनिया में पूर्व–स्थापित, एक दैवीय डिजाइन के अनुसार सामंजस्य स्थापित किया जा रहा है) का प्रभाव। वह अपने लिए उपलब्ध कई विकल्पों में से मनुष्यों के लिए 'सर्वश्रेष्ठ संभव दुनिया' चुनने में ईश्वरीय अच्छाई की पुष्टि करने के लिए आगे बढ़ता है। कैंडीड* वोल्टेयर (1694–1778) में हमारी इस थीसिस को सबसे अच्छा संभव ब्रह्मांड बताया गया है।

* इस उपन्यास का प्रकाशन 1755 के लिस्बन भूकम्प से प्रेरित था, जिसने 20,000 निर्दोष जीवन का दावा किया था। अनिवार्य रुप से कैंडीड लीबनिजियन आशावाद के खिलाफ एक व्यंग था कि हमारी दुनिया

1.4 सर आइजैक न्यूटन

न्यूटन (1643–1727) के भौतिकी का अठारहवीं शताब्दी में दार्शनिक विचार पर काफी प्रभाव था। न्यूटन जानूस का सामना कर रहे थे, उन्होंने दुनिया के भौतिक और यांत्रिक भौतिक सिद्धांत और ईसाई धर्म दोनों से प्रेरित महसूस किया। विज्ञान और दर्शन के बीच एक महत्वपूर्ण बहस अंतरिक्ष और समय की धारणा पर थी, और इसमें न्यूटन और लाइबनिज शामिल थे। न्यूटोनियन यांत्रिकी ने एक अनंत और खाली स्थान में गतिमान पदार्थ की दुनिया की परिकल्पना की। इसी तरह समय की कल्पना एक अंतहीन और शुरुआत रहित माध्यम के रूप में की गई थी। इन दोनों माध्यमों में प्रकृति की विभिन्न घटनाएं घटी हैं। लाइबनिज ने इसका जोरदार विरोध किया क्योंकि उनकी तत्वमीमांसा आध्यात्मिक इकाइयों के रूप में मोनडों के इर्द–गिर्द घूमती थी। उन्होंने निकायों और घटनाओं के सापेक्ष अंतरिक्ष और समय की सापेक्षता पर जोर दिया।

1.5 प्रबोधन या नव–जागरण

न्यूटोनियन यांत्रिकी की उपलब्धियों के बाद यूरोप ने तर्क में विश्वास का पुनरुत्थान, यद्यपि एक वैज्ञानिक तर्कसंगतता देखा। 1688 की 'शानदार क्रांति' के बाद इंग्लैंड में सबसे पहले उभरने वाले इस आंदोलन का नाम ज्ञानोदय था। इसके बाद ज्ञानोदय फ्रांस में फैल गया, जो वोल्टेयर जैसे युवा बुद्धिजीवियों द्वारा प्रेषित किया गया, जिन्होंने इंग्लैंड में काफी लंबा समय बिताया था। 1789 में फ्रांसीसी क्रांति को प्रबोधन विचारधारा के चरम बिंदु के रूप में देखना अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस आंदोलन का असर स्पेन, इटली और जर्मनी में महसूस किया गया, इन जगहों पर पारंपरिक सोच पर हमला किया गया।

प्रबोधन की विचारधारा खुले तौर पर धर्म विरोधी नहीं थी। फिर भी, तर्कसंगतता के लिए इसके प्रोत्साहन ने, ईश्वरीय ढांचे के बाहर, इसे चर्च के विरोध में रखा। बौद्धिक स्वायत्तता पर जोर दिया गया, साथ ही, महत्वपूर्ण रूप से, विभिन्न प्रकार के ब्रह्माण्डीय मानवतावाद पर। धर्म के नाम पर साम्प्रदायिक लड़ाइयों के परिणामस्वरूप लोगों का विखंडन हुआ था। प्रबुद्धता ने संवेदनहीन रक्तपात से थकी हुई जनता को उपचारात्मक स्पर्श प्रदान किया। इस युग में दार्शनिकों ने राष्ट्रीय सीमाओं को काटकर मानवता के एकीकरण का आह्वान किया। उनके विश्वास के कारण, वे प्रकृति के मूल संसाधनों का दोहन करेंगे और पृथ्वी पर स्वर्ग की

सबसे अच्छी दुनिया है। कैंडीड में पाठक को वाल्टेयर की अंतिम सलाह, बिना सिद्धांत के जीवन जीना और काम करना जारी रखने के लिये थी। यह बुराईयों और दर्द को सहने का सबसे अच्छा तरीका होगा, जो हमारे लिए बिना किसी बाधा के आता है।

स्थापना करेंगे। सामान्य रूप से बिना कहे मानवता को मजबूत करने का यह मिशन अफ्रीका से लाए गए दासों के परिश्रम के माध्यम से ही महसूस किया गया था। यूरोपीय लोगों, विशेष रूप से, पुर्तगालियों ने, सोने और मसालों की तलाश में, 1415 के आसपास अफ्रीका पर आक्रमण किया। सौ साल बाद अफ्रीकियों को गुलाम बनाकर बेचा जा रहा था।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी :

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. प्रबोधन आंदोलन की मुख्य विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

1.6 उपनिवेशवाद

क्रिस्टोफर कोलंबस (1451–1506), एक इतालवी खोजकर्ता, जो भारत के लिए एक छोटा रास्ता खोजने का इरादा रखता था, ने अटलांटिक महासागर में चार यात्राएँ पूरी कीं, जिससे अमेरिका के व्यापक यूरोपीय उपनिवेशीकरण का रास्ता खुल गया। सोलहवीं शताब्दी तक, पुर्तगालियों ने एशिया के व्यापार मार्गों पर विजय प्राप्त कर ली थी, जो पहले अफ्रीकियों, एशियाई और अरबों के नियंत्रण में थे। शीघ्र ही स्पेनी धन संचय करने की इस दौड़ में कूद पड़े। मिशनरियों को इन विदेशी भूमि पर ले जाया गया ताकि इन भूमि की स्वदेशी आबादी को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया जा सके। अंग्रेज, डच और फ्रांसीसी सभी अंततः नई भूमि पर विजय प्राप्त करने और उपनिवेश स्थापित करने के इस मिशन में शामिल हो गए। जाहिर है, इस क्रूर आचरण ने उन्हें एक–दूसरे के दुश्मन बना दिया क्योंकि वे एक–दूसरे को विस्थापित करने और अपना विशेष प्रभुत्व स्थापित करने के लिए दौड़ पड़े। कीमती धातुओं और अन्य संसाधनों को छीनने की आवश्यकता के लिए मानव शक्ति की आवश्यकता होती है।

> ***आओ विचार करें –II***
>
> क्या आप सोचते हैं कि उपनिवेशवाद स्थानीय/देशज लोगों को "सभ्य" बनाने आये थे या अपने स्वार्थ के लिए?

इस प्रकार अफ्रीकी दासों के लिए एक बाजार स्थापित किया गया। उत्तरी अमेरिका को उपनिवेश बनाने के अलावा, अफ्रीका और भारत में पैठ बनाई गई। 1776 में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के बाद अंग्रेजों को अमेरिका छोड़ना पड़ा, उन्होंने ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और बड़ी संख्या में प्रशांत द्वीपों में मारने के लिए घुसपैठ नही की। एक यूरोपकेंद्रित उपनिवेशवाद मजबूती से स्थापित था।

1.7 अनुभववाद

1.7.1 लॉक

अनुभववाद, साधारणतया कहा गया, दार्शनिक सिद्धांत है जिसके अनुसार सभी ज्ञान इंद्रियों के अनुभव से शुरू होते हैं। जॉन लॉक (1632–1704) ने तर्क में तर्कवादी विश्वास की सदस्यता नहीं ली। उन्होंने सुझाव दिया कि, अमूर्त कारण पर भरोसा करने के बजाय हमें जो कुछ जानने की जरूरत है उसे इकट्ठा करने के लिए अनुभव को नियोजित करना चाहिए। यह पश्चिम में बौद्धिक विचार के रूप में एक सफलता थी क्योंकि प्लेटो ने इन्द्रिय–आधारित ज्ञान को गलत के रूप में अस्वीकार कर दिया था। लॉक ने सरकार पर दो सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ लिखे। लॉक मानवाधिकारों की धारणा के प्रति संवेदनशीलता प्रदर्शित किया जो राजनीतिक विमर्श में शामिल हो गई थी, विशेष रूप से निजी संपत्ति का अधिकार।

लॉक ने जन्मजात विचारों के सिद्धांत का खण्डन किया जो तर्कवाद के लिए मौलिक था। उन्होंने मन को एक 'रिक्त कागज/ कोरा कागज' के रूप में देखा, जिस पर अनुभव को जीवन भर लिखते रहो। मन में कुछ भी जन्मजात नहीं है, मन में जो कुछ भी है, वह हमारी इंद्रियों द्वारा उसमें पहुँचाया जाता है। कई विद्वानों का मत है कि लॉक ने लोकतंत्र और उदारवादी आंदोलन के बीज बोए। उन्होंने प्रसिद्ध रूप से देखा था कि कोई भी सरकार शासितों की सहमति से अपनी शक्ति प्राप्त करती है। ष्शासितष् के पास कारण होना चाहिए यदि वे किसी सरकार में भाग लेना चाहते हैं।

1.7.2 जॉर्ज बर्कले

बर्कले (1685–1753) ने वास्तव में हमारे दिमाग में दुनिया से अलग एक 'सारभूत' दुनिया के अस्तित्व को नकार दिया। वह एक गहरा धर्मनिष्ठ ईसाई था जो विज्ञान और धर्म के बीच निरंतर संघर्ष से परेशान था। यह उनका दृढ़ विश्वास था कि नास्तिकों ने एक अभौतिक पदार्थ और विधि का उपहास करते हुए एक स्वतंत्र रूप से मौजूद मामले के अस्तित्व की सदस्यता ली। तो, उनकी परियोजना पूरे वैज्ञानिक उद्यम को खतरे में डाले बिना पदार्थ के अस्तित्व को कम करने की थी। उन्होंने अपने विचार में यह कहते हुए हासिल किया कि हमारे

अनुभव के अलावा कोई ठोस दुनिया नहीं है। इस अनुभव में विचार शामिल हैं, और ये विचार, चूंकि बाहरी दुनिया को पहले ही खारिज कर दिया गया है, इसलिए इसे भगवान के लिए स्रोत होना चाहिए। बर्कले का प्रसिद्ध कथन 'दृश्यते इति वर्तते,' उनके विश्वास की एक अभिव्यक्ति है कि ईश्वर ब्रह्मांड के मूल में है; दूसरे शब्दों में, जब मानव मन द्वारा अनुभव नहीं किया जा रहा है, तो दुनिया एक दिव्य चेतना में शाश्वत है।

बर्कले का अनुभववाद बल्कि कमजोर था, उन्होंने निस्संदेह पदार्थ के अस्तित्व को कम करने के लिए अनुभववादी परीक्षण को नियोजित किया, लेकिन भौतिक पदार्थ के अस्तित्व के बारे में अपने विश्वासों का परीक्षण करने के लिए इसे लागू नहीं किया।

1.7.3 डेविड ह्यूम

मैं ह्यूम की पुस्तक *इन्क्वायरी* का हवाला देते हुए ह्यूम (1711–1776) पर चर्चा शुरू करना चाहती हूं, यह ह्यूम की स्थिति का एक गूढ़ कथन है। वे कहते हैं, ''सटीक और न्यायसंगत तर्क ही एकमात्र कैथोलिक उपाय है, जो सभी व्यक्तियों और सभी स्वभावों के लिए उपयुक्त है; और अकेले ही उस गूढ़ दर्शन और तत्वमीमांसा शब्दजाल को उलटने में सक्षम है, जो लोकप्रिय अंधविश्वास के साथ मिलकर इसे लापरवाह तर्ककर्ताओं के लिए अभेद्य बना देता है, और इसे विज्ञान और ज्ञान की हवा देता है।"* ह्यूम के अनुसार, सभी सरल विचार सरल छापों की स्मृति प्रतियां हैं, जटिल विचार सरल विचारों के संयोजन हैं। इसे अर्थ का अनुभवजन्य मानदंड कहा जाता है।

नाममात्रवाद इस मानदंड का तार्किक परिणाम था। इसमें निहित सार्वभौमिकों का खंडन भी है। ह्यूम ने पदार्थ और स्वयं की धारणाओं को खारिज करने के लिए अनुभवजन्य मानदंड का एक कठोर संस्करण लागू किया। पश्चिमी विचारों में इन दोनों मूलभूत अवधारणाओं का मुकाबला करने के लिए ह्यूम ने विस्तृत तर्क दिए हैं। इसी तरह उन्होंने बताया कि बाहरी दुनिया के अस्तित्व के लिए कोई सबूत पेश नहीं किया जा सकता है। उन्होंने बाहरी दुनिया में इस विश्वास को कल्पना के संकाय के लिए स्रोत बनाया। मैं उस तर्क के विवरण में नहीं जाऊंगी जो उसने ऐसा करने के लिए तैयार किया है, यह कहना पर्याप्त है कि ह्यूम ने जोर देकर कहा है कि बाहरी दुनिया, या भौतिक वस्तुओं में विश्वास के आधार तार्किक नहीं हैं, वे मनोवैज्ञानिक हैं।

---

* *एन इनक्वाइरी कनसर्निंग द ह्यूमन अण्डरस्टेण्डिंग*, संम्पा. एल. बी.सेल्बि–बिग्गे, क्लारेंडोन, आक्सफोर्ड, 1894, पृ. 1.

आधुनिक पश्चिमी विचारों में ह्यूम का योगदान यह खोज है कि विश्वासों का पूर्ण निलंबन अस्थिर है। संशयवाद, शुद्ध और सरल, एक अव्यवहार्य विकल्प है। ह्यूम के लिए सामान्य लोग बाहरी दुनिया के लिए एक तार्किक सबूत की अनुपस्थिति के बावजूद अपने जीवन का व्यवसाय करते हैं जिसमें ये जीवन लंगर डाले हुए हैं।

1.8 पूंजीवाद, व्यक्तिवाद

आइए हम रुकें और विशिष्ट दार्शनिकों के चल रहे विवरणों को बाधित करते हुए, आधुनिक युग में विकसित विचारों का जायजा लेने का प्रयास करें। जैसा कि रॉबर्ट सोलोमन ने देखा है, ''आधुनिक दर्शन ऑन्कोलॉजी, महामारी विज्ञान और तत्वमीमांसा के बारे में एक विस्तारित बहस नहीं था। यह मानवतावाद और तर्कशीलता की रक्षा था, घातक नरसंहारों के बजाय जीवंत बातचीत की दलील था।"* पूंजीवाद का उदय हो चुका है और इसे सही ठहराने के लिए एक नए दर्शन की जरूरत महसूस की जा रही है। प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने एक दिव्य दुनिया में छुटकारे के बजाय सांसारिक सफलता पर ध्यान केंद्रित किया था। नए उपनिवेशवादियों की दुनिया ने अपने क्षेत्रों का विस्तार देखा, यह इंग्लैंड, फ्रांस, हॉलैंड और स्पेन के बारे में सच था। व्यापार अब भीतर स्थानीयकृत नहीं था, इसके बजाय एक अंतरराष्ट्रीय व्यापार, धन–आधारित अर्थव्यवस्था के साथ, उत्पन्न हुआ था।

एडम स्मिथ (1723–1790), जिसे मुक्त–उद्यम प्रणाली का जनक कहा जाता है, ने देखा कि कैसे स्व–हित जनता की भलाई कर सकता है। स्व–इच्छुक व्यक्तियों द्वारा प्रेरित एक प्रतिस्पर्धी समाज, उपभोक्ता संतुष्टि और कम कीमतों की ओर ले जाएगा। सामंती समाज की विशेषता, गिल्ड–अर्थव्यवस्था, धीरे–धीरे कम हो गई क्योंकि लाईसेज़–फ़ायर (हमें अकेला छोड़ दो) की मांग तेज हो गई। व्यक्तिवाद, विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक के रूप में, स्मिथ में अपना भावुक बचाव किया।

1.9 वोल्टेयर, रूसो, फ्रांसीसी क्रांति

1789 की फ्रांसीसी क्रांति, विचारों, न्याय, समानता और शासन की क्रांति के साथ शुरू हुई थी। इसने सम्राट और शासित के बीच संबंधों को पूरी तरह से बदलने और राजनीतिक शक्ति की धारणा को फिर से परिभाषित करने की मांग की। फ्रांस में राजशाही को उखाड़ फेंका गया। रूसो (1712–1778) और वोल्टेयर (1694–1778) जैसे विचारकों के विचारों ने क्रांति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वोल्टेयर फ्रांसीसी राज्य और चर्च के कटु आलोचक थे। लॉक के प्रशंसक, उन्होंने तर्क के लिए भावुकता से तर्क दिया। रूसो ने इस बात पर जोर

* *ए शार्ट हिस्ट्री आफ फिलोसोफी*, रोबेर्ट सी. सोलोमन कैथलीन एम. हीगिंस, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996, पृ. 198.

दिया कि एक अच्छी सरकार को अपने सभी नागरिकों की स्वतंत्रता अपने केंद्रीय सिद्धांत के रूप में होनी चाहिए। रूसो अंतहीन रूप से उद्धृत करने योग्य है। उनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने देखा है कि वह गुलामी के साथ शांति की तुलना में खतरे के साथ स्वतंत्रता पसंद करते हैं। उनके सामाजिक अनुबंध सिद्धांत ने जोर देकर कहा कि सरकार शासितों की सहमति से अस्तित्व और शासन करने के अपने अधिकार को प्राप्त करती है। यह अठारहवीं शताब्दी में एक क्रांतिकारी स्थिति थी। उन्होंने देखा कि राजाओं को कानून बनाने का दैवीय अधिकार नहीं था, केवल लोग ही संप्रभु हैं। इस सोच ने फ्रांसीसी क्रांति पर एक बड़ा प्रभाव डाला। क्रांति मूल रूप से, अभिजात वर्ग के विशेषाधिकारों और धन के खिलाफ एक लोकप्रिय विद्रोह था।

1776 में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम का उल्लेख नहीं करना गलत होगा। यह उल्लेखनीय है कि, चूंकि अमेरिका में शुरुआती बसने वालों के पास जटिल आध्यात्मिक प्रश्नों में संलग्न होने के लिए बहुत कम अवकाश था, इसलिए वे व्यावहारिक संवेदनशीलता के साथ बस गए। नवेली राष्ट्र के लिए तैयार किए गए संविधान में अधिकारों के अंग्रेजी प्रवचन का प्रमाण दिया गया था। हमारे दृष्टिकोण से यह महत्वपूर्ण है कि अधिकारों और विभिन्न न्यायिक अधिकारों के बारे में बात पश्चिमी चेतना में मजबूती से समा गई है।

1.10 इम्मैनुएल काण्ट

आइए अब हम अपने ऐतिहासिक आख्यान को फिर से शुरू करते हैं। इम्मानुएल काण्ट (1724–1804) ने विज्ञान और धर्म के बीच संघर्ष के निश्चित मोड़ को चिह्नित किया। जबकि काण्ट एक धर्मनिष्ठ ईसाई थे, वे न्यूटनियन यांत्रिकी में भी विश्वास करते थे। उनका मानना था कि मानव सभ्यता में ईश्वर, स्वतंत्रता और अमरता के बारे में प्रवचन लगातार मौजूद रहा है, इसे विज्ञान पर उतारा नहीं जा सकता। उन्होंने खगोल विज्ञान के साथ–साथ नैतिक कानून से समान रूप से मोहित होने की बात की। लोकप्रिय कल्पना में काण्ट की तुलना एक दार्शनिक–जादूगर से की गई है, जो तर्कवाद और अनुभववाद के शुद्ध संस्करणों से अलग हो गए, और उनकी पूरकता को देखने की आवश्यकता पर बल दिया। हालाँकि, यह कहा जा सकता है कि काण्ट की यह धारणा बहुत ही प्रतिबंधात्मक है, यह उन्हें केवल उन चिंताओं से जूझने के रूप में पेश करती है जो उनके साथी–दार्शनिकों द्वारा उठाई गई थीं। काण्ट को वास्तव में एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में पहचाना जा सकता है, जिन्होंने कई 'एजेंडे' पर काम किया और तर्कवादी आधार पर विज्ञान, धर्म और नैतिकता को स्थापित करना चाहते थे। काण्ट को दोहरी रेखाओं के साथ बिखरी हुई तर्कसंगतता, शुद्ध और व्यावहारिक होने का श्रेय जाता है।

काण्ट ने दुनिया को दो पहलुओं में विभाजित किया, फेनोमेनल और नूमेनल। ईश्वर, स्वतंत्रता और अमरता जैसे आध्यात्मिक मुद्दे व्यावहारिक कारण के दायरे में आते हैं, और व्यहारिकता के दायरे से संबंधित हैं। दूसरी ओर, बाहरी दुनिया शुद्ध कारण से संबंधित है, जो वैज्ञानिक तर्कसंगतता के बराबर है। काण्ट के लिए, हमारे अनुभव की वस्तुओं का गठन दिक और काल के एक प्राथमिक अंतर्ज्ञान और समझ की एक प्राथमिक श्रेणियों के अनुरूप होता है। उदाहरण के लिए, 'पदार्थ' जैसे शब्द का उसके गुणों से अनुमान नहीं लगाया जाता है, यह एक श्रेणी है, एक संरचना सिद्धांत है जिसके अनुसार हम किसी वस्तु का अनुभव करते हैं। तर्कवादियों और अनुभववादियों के लिए काण्ट का उत्तर यह है कि, जबकि ज्ञान निस्संदेह अनुभव से शुरू होता है, इसे अनुभव से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अनुभव सुसंगतता प्राप्त करता है यह केवल उन श्रेणियों द्वारा आयोजित किया जा रहा है जो समझ में एक प्राथमिकता है।

यह अभूतपूर्व दुनिया की तस्वीर थी, न्यूटोनियन विज्ञान की दुनिया जिसने काण्ट में अपनी पुष्टि पाई। काण्ट ने एक न्यूमनल (अनुभवातीत) दुनिया की भी पुष्टि की है। यह कोई मनमाना आयात नहीं था। यह अपने परिचर नियतत्ववाद के साथ वैज्ञानिक तर्कसंगतता को कम करने के लिए है। चुनाव करने, इच्छा करने की हमारी क्षमता हमारी स्वतंत्रता का प्रतीक है। बेशक, यहां, जैसा कि शुद्ध कारण की आलोचना में है, काण्ट सार्वभौमिकरण की आवश्यकता पर जोर देते हैं। नैतिकता के लिए हमें दूसरों की आंतरिक मानवता का सम्मान करने की आवश्यकता होती है, उनकी प्रसिद्ध श्रेणीबद्ध अनिवार्यताएं इसकी गवाही देती हैं।

आओ विचार करें –III

दिक् और काल के सम्बन्ध में दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के विचार से इतर, हम, आप और मैं किस तरह दिक् और काल का अनुभव करते हैं।

तो, काण्ट ने आधुनिक पश्चिमी विचारों को कैसे प्रभावित किया? कई तरीकों से, जिसका मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है; सबसे पहले, *क्रिटिक ऑफ प्योर रीज़न* में न्यूटनियन विज्ञान के उनके औचित्य को एक मार्मिक इशारा के रूप में देखा जा सकता है, क्योंकि किसी अन्य दार्शनिक द्वारा वैज्ञानिक सिद्धांत के लिए समान समर्थन नहीं मिलता है। दूसरा, चेतना के बारे में उनके 'संकाय या कोटिगत' दृष्टिकोण, एक काफी समस्याग्रस्त धारणा का दर्शन और मनोविज्ञान में विचार की बाद की परंपराओं पर काफी प्रभाव पड़ा है। काण्ट के नैतिक सिद्धांत में भावात्मक, रचनात्मक और संज्ञानात्मक रेखाओं के साथ खंडित एक चेतना को कई आलोचकों ने पाया, जिन्होंने चेतना में 'अंतराल' को पाटने का प्रयास किया। अंत में, काण्ट के नैतिक सिद्धांत में मानव की धारणा 'उसमें एक अंत के रूप में' और मानव स्वायत्तता की रक्षा के लिए कई तत्व उत्तरदायी हैं। यह अपने समय के लिए एक क्रांतिकारी आह्वान था। आज, लगभग ढाई सौ साल बाद, हमें इस अमूल्य अंतर्दृष्टि की लगातार याद दिलाना है।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी :

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. काण्ट के किन विचारों ने पाश्चात्य दर्शन की भविष्यगत वैचारिकी को प्रभावित किया?

.....

.....

.....

.....

1.11 स्वच्छंदतावाद (रोमांटिसिज्म)

यूरोप में यह आंदोलन दर्शन और साहित्य में सत्य तक पहुंचने के लिए इस्तेमाल की जा रही एक शुद्ध वैज्ञानिक तर्कसंगतता के विरोध के रूप में उभरा। दर्शन में ष्सत्यष हमेशा निगमनात्मक नहीं होता है, प्रेरणा या अंतर्ज्ञान अधिक बार इस दायरे में आदर्श होते हैं, रोमांटिक की दलील है। जोहान हेर्डर (1744–1803), गिआम्बतिस्ता विको (1668–1744) के नक्शेकदम पर चलते हुए अफसोस जताया कि काण्ट में सार्वभौमिकता ने उन्हें 'बेघर' महसूस कराया। उन्होंने शिकायत की कि दर्शन द्वारा सत्य को कालातीत माना गया है। रोमांटिक आंदोलन ने मानव जीवन के 'तर्कहीन' पहलुओं पर प्रकाश डाला, अस्तित्व को देखने के लिए कारण एकमात्र श्रेणी नहीं हो सकती, वह रोमांटिक आधार था। मानव जीवन में केवल तर्क ही नहीं, बल्कि कलह, संघर्ष और परिवर्तन भी देखने को मिलते हैं।

1.12 हेगेल, मार्क्स

जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल (1770–1831) ने अपने दार्शनिकों से विरासत में मिली द्वंद्वों पर काबू पाने के द्वारा अपने दर्शन की शुरुआत की। ऐसा ही एक द्वैत था काण्ट में फेनोमेना–न्यूमेना या घटना–नाम। इसी तरह, चेतना का एक संकाय दृष्टिकोण उनके लिए अस्वीकार्य था। यही कारण है कि उन्होंने स्पष्ट अनिवार्यता का विरोध किया, यह केवल कारण का उदाहरण था, व्यक्तिगत आकस्मिकताओं से अलग। इसी तरह, मन और शरीर के बीच कार्टेशियन द्वैतवाद को हेगेल ने वास्तविकता की गलत अवधारणा के रूप में खारिज कर दिया था। हेगेल के विचार में आत्म–चेतना एक निजी मानसिक घटना नहीं थी; यह हमेशा एक

सामाजिक स्थान में स्थित था। एक प्रमुख हेगेलियन अंतर्दृष्टि मानदंडों, रीति–रिवाजों, संस्कृतियों और विश्व–विचारों की इस विशाल बहुलता में एकता को समझना था। हेगेल के दर्शन को समझने के लिए अक्सर इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्ति 'द्वंद्वात्मक' है। डायलेक्टिक का अर्थ है 'कारण देना' – जीवन का प्रत्येक रूप इस बात की पुष्टि करता है कि इसे अपने लिए आधिकारिक होने के लिए क्या करना चाहिए, या विश्व–विचारों के भीतर संशोधन क्यों किए जाने चाहिए।

कार्ल मार्क्स (1818–1883), हालांकि हेगेल के लगातार आलोचक थे, लेकिन बाद वाले ने उनका कोई ठोस प्रभाव नहीं दिखाया। हेगेल ने उन अंतर्विरोधों के बारे में बात की थी जो एक दर्शन में आते हैं, उनका मिशन उन्हें हल करना था। मार्क्स ने पूंजीपति वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच संघर्ष को एक आर्थिक टकराव का उदाहरण माना। जहाँ हेगेल ने संघर्ष के विचारों को देखा था, वहीं मार्क्स ने संघर्ष की इस अवधारणा को एक ठोस ऐतिहासिक, सामाजिक संदर्भ में लागू किया। मार्क्स की कब्र पर निम्नलिखित शब्द अंकित हैं, ''दार्शनिकों ने केवल दुनिया की, विभिन्न तरीकों से व्याख्या की है। हालाँकि, बिंदु इसे बदलने का है।"

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी :

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1. आधुनिक पाश्चात्य विचार की मुख्य विशेषताएं क्या हैं? अथवा, चर्चा कीजिए कि आधुनिक पाश्चात्य विचार में विचारों का विकास कैसे हुआ?

.....

.....

.....

.....

1.13 सारांश

हमने यहां कई दार्शनिकों के बारे में बात की है और उनकी सोच, कुछ आंदोलनों, सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक, पर भी प्रकाश डाला गया है। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी समान रूप से घटनापूर्ण रही हैं। फेनोमेनोलॉजी, अस्तित्ववाद, संरचनावाद और

उत्तर–संरचनावाद कुछ सबसे प्रमुख तरीके हैं जिनमें पश्चिम में सोच ने खुद को व्यक्त किया है। इस बाद के विचार ने उन परंपराओं से बहुत अधिक उधार लिया है जिनका हमने इस इकाई में अध्ययन किया है।

इस इकाई के मुख्य बिन्दु रहे,

• लगभग 1500–1800 ई. का इतिहास।

• सुधार रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकार के लिए एक चुनौती के रूप में।

• धार्मिक स्रोतों से प्राप्त एक विज्ञान ने चुनौती दी, एक नई भौतिकी की शुरुआत।

• तर्कवाद, अनुभववाद और आलोचना जैसे आंदोलनों का प्रभाव।

• देकार्त के साथ व्यक्तिपरकता की विरासत का उद्घाटन हुआ। विचारक को सीधे उपलब्ध सत्य, पादरियों की मध्यस्थता आवश्यक नहीं है।

• ज्ञानोदय; तर्क/बुद्धि का पुनरुत्थान।

• उपनिवेशवाद का परिणाम क्षेत्र में विस्तार हुआ, विस्तारित अंतर्राष्ट्रीय व्यापार।

• लॉक ने लोकतंत्र और उदारवाद के बीज बोए।

• एक प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने पूंजीवाद और व्यक्तिवाद को वैधता प्रदान की।

• फ्रांसीसी क्रांति के साथ समाज में स्वतंत्रता और समानता के नए आदर्शों को पेश किया गया जो पदानुक्रमित थे।

• आधुनिक पश्चिमी चिंतन में काण्ट का योगदान मानवीय गरिमा की मान्यता और स्वायत्तता की आवश्यकता है।

• हेगेल ने हमें विचारों के बीच एक द्वंद्वात्मक आंदोलन दिया, मार्क्स ने इस पद्धति को एक ठोस सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में लागू किया।

1.14 कुंजी शब्द

सुधार : सुधार प्रोटेस्टेंटवाद की शुरुआत थी और पश्चिमी चर्च का प्रोटेस्टेंटवाद में विभाजन और अब रोमन कैथोलिक चर्च क्या है।

ज्ञानोदय : यह एक बौद्धिक और दार्शनिक आंदोलन था जिसने 17वीं और 18वीं शताब्दी में वैश्विक प्रभावों और प्रभावों के साथ यूरोप पर अपना प्रभुत्व जमाया था। इसके अलावा, वैज्ञानिक तर्क की उम्र।

स्वच्छंदतावाद : कला और साहित्य में एक आंदोलन जो 18 वीं शताब्दी के अंत में उत्पन्न हुआ, प्रेरणा, व्यक्तिपरकता और व्यक्ति की प्रधानता पर जोर दिया।

1.15 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

ब्रोनोस्की, जे. एण्ड मज़लिश, बी. *द वेस्टर्न इंटेलेक्चुअल ट्रेडिशन.* लंदनः हचिंशन, 1960.

जॉन्स, डब्ल्यू. टी. *हॉब्स टू ह्यूम.* न्यू यॉर्कः हार्कोर्ट, ब्रेस एण्ड वर्ल्ड, आईएनसी.,1969.

सोलोमन, आर.सी. एण्ड हिग्गिन्स के.एम. *ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ फिलॉसोफी.* ऑक्सफोर्डः ऑप्कस्फोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996.

वेव–लिंक्स

http://sdeuoc.ac.in/sites/default/files/sde_videos/SLM-19508-%20Philosophy-Modern%20western%20philosophy.pdf

https://iep.utm.edu/category/history/

http://www.philosophypages.com/hy/

1.16 बोध प्रश्नों के उत्तर

(***उत्तरों के लिए दिग्दर्शिका:*** शिक्षार्थी, जहाँ उपयुक्त हो, स्वयं के दृष्टांतों और उदाहरणों के माध्यम से उत्तरों की पुष्टि करें।)

बोध प्रश्न 1

1.

- तर्कबुद्धि में विश्वास
- बौद्धिक स्वायत्तता
- ब्रह्माण्डीय मानववाद

बोध प्रश्न 2

1.

- न्यूटन की भौतिकी का प्रमाण
- चेतना या तर्कबुद्धि का कोटिगत विचार
- मानव स्वयं में साध्य के रूप में
- मानव स्वायत्तता का विचार

बोध प्रश्न 3

1.

• समय–सीमा का उल्लेख करें, अर्थात, 1500–1800 ई.।

• रोमन कैथोलिक चर्च के खिलाफ विद्रोह क्योंकि चर्च राज्य के मामलों में हस्तक्षेप कर रहा था। इसके अलावा, यह ब्रह्मांड विज्ञान को बढ़ावा दे रहा था जो नए विज्ञान के लिए अस्वीकार्य थे।

• कोपरनिकस द्वारा शुरू की गई वैज्ञानिक क्रांति ने अरस्तू के विज्ञान को निरस्त किया।

• तर्कवादी परंपरा में देकार्त ने पश्चिम में व्यक्तिपरकता के युग का उद्घाटन किया। व्यक्तिवाद भी एक परिणाम है।

• ज्ञानोदय, एक वैज्ञानिक कारण का जश्न मनाते हुए, हठधर्मिता और अंधविश्वास के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

• उपनिवेशवाद, व्यापार में वृद्धि के साथ, पूंजीवाद और एक प्रतिस्पर्धी समाज उत्पन्न हुआ।

• काण्ट की स्वायत्तता और मानव की आंतरिक गरिमा का आह्वान।

• हेगेल की आत्मा, एक ब्रह्माण्डीय मानवतावाद से प्रेरित, एक एकीकृत आदर्श।

• वर्ग संबंधों को फिर से परिभाषित करके दुनिया को बदलने के लिए मार्क्स का एजेंडा।

इकाई 2 पुनर्जागरण*

रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 परिचय

2.2 महत्वपूर्ण घटनाक्रम और उनके महत्व

2.3 पुनर्जागरण काल के सांस्कृतिक और दर्शानिक पक्ष

2.4 पुनर्जागरण काल के प्रमुख विचारक

2.5 पाश्चात्य दर्शन के महत्वपूर्ण क्षेत्र

2.6 सारांश

2.7 कुंजी शब्द

2.8 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य पुनर्जागरण काल के तथ्यों का विश्लेषण व पश्चिमी दर्शन के विकास पर प्रकाश डालना है। प्रायः यह देखा गया है कि एक निश्चित समय का दर्शन अपने समय की संस्कृति से सम्बन्धित होता है। इसलिये यदि हम आधुनिक पाश्चात्य दर्शन को समझना चाहते हैं तो हमारे लिये पुनर्जागरण काल और प्रबोधन काल की संस्कृति से परिचित होना

* डॉ. कीथ डि'सूज़ा, सें. पीयस महाविद्यालय, मुम्बई। (यह इकाई बीपीवाई–008 की "पुनर्जागरण काल" इकाई का संशोधित संस्करण है)। अनुवाद– आनन्द रवि, फरीदाबाद।

आवश्यक है। यह इकाई पुनर्जागरण काल की संस्कृति और अगली इकाई प्रबोधन काल की संस्कृति पर प्रकाश डालती है। इस इकाई के उपरान्त छात्र निम्न से परिचित हो जायेंगे;

- पुनर्जागरण काल की आधारभूत समझ से
- पुर्जागरण काल की संस्कृति और दर्शन के विभिन्न पक्षों से
- इस काल के चिन्तकों और व्यक्तित्वों तथा उनके योगदानों से
- आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के सन्दर्भ में इस काल के महत्व से

2.1 परिचय

अंग्रेजी शब्द रेनेसा (हिन्दी में पुनर्जागरण) को फ्रेच/लेटिन भाषा के रिबर्थ (हिन्दी में पुनर्जीवन) शब्द से लिया गया है। यह यूरोपियन विश्व के उस अनुभव को द्योतित करता है जो चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से हुआ माना जाता है और जिसे नवीन ज्ञान, संस्कृति, कला के पुर्नजन्म के रूप में व्याख्यायित किया जाता है। इस काल के लोगों ने यह अनुभव किया कि उनके वर्तमान समय और 'अंधकार युग' में तीक्ष्ण अन्तर है। साथ ही उन्होंने देखा कि उनकी अपनी सभ्यता और ग्रीको–रोमन सभ्यता, जो 400 ई.पू. से 300 ई.पू. में फली फूली थी, के मध्य कहीं अधिक समानता थी। यद्यपि, बाद के कुछ इतिहासकार इस कथन से सहमत हैं तो कुछ असहमत। जूल्स माइकलेट अपनी पुस्तक *ला रेनेसा* में स्पष्ट करते हैं कि इस काल के दो प्रमुख महत्वपूर्ण लक्षण हैं, दुनिया की खोज व मानव की खोज।

पुनजागरण का शुरूआत इटला में हुई। जिसकी अवधि 1300–1600 मानी जाती है। ऐतिहासिक रूप से यह मध्य काल से प्रारम्भ होकर आधुनिक युग, जो प्रबोधन से प्रारम्भ हुआ माना जाता है, तक विस्तारित है। राजनीतिक रूप से मध्ययुगीन यूरोप में सामन्ती पदानुक्रम का वर्चस्व था। जिसका अर्थ था किसानों का जमीनदारों के अधीन होना और जमीनदारों का अपने से ऊपर के सामन्तों के अधीन होना। यह क्रम क्रमशः राजा तक जाता था। ज्ञान के क्षेत्र में कैथेलिक चर्च का वर्चस्व था और सभी प्रकार की कला, विज्ञान और दार्शन क्रिश्चियन धर्मशास्त्र के अधीन थे। अतः मध्ययुगीन वास्तु कला प्रधान चर्चों के रूप से और कला धार्मिक

चित्रकारी के रूप में प्रदर्शित हुई। यहां तक कि प्राचीन लेखकों को मुख्य रूप से लेटिन भाषा को जानने के लिए पढ़ा जाता था। लेटिन भाषा धर्मशास्त्र के अध्ययन के लिये अनिवार्य थी। स्कालिस्टिसिज्म शब्द को इसी प्रवृत्ति और प्रविधि, जिसका 19वीं शती तक ह्रास होने लगा था, का वर्णन करने के लिये ही प्रयुक्त किया जाता था।

पुनर्जागरण ने कला, विज्ञान, दर्शन आदि पर धर्म के वर्चस्व को समाप्त कर दिया। चौदहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से इन विषयों को अपनी रूचि के लिए पढ़ने की प्रवृत्ति उत्पन्न होने लगी। इससे कला, विज्ञान, दर्शन का स्वतन्त्र विकास होने लगा और इसने आधुनिक दर्शन के लिये रास्ता खोल दिया। यह वैचारिक स्वतन्त्रता प्रोटेस्टेन्ट सुधारों, जिसने कैथोलिक चर्च के आधिपत्य को उत्तरी यूरोप में समाप्त कर दिया, में भी अभिव्यक्त हुई। सामन्ती प्रथा इस समय में चरमरा रही थी क्योंकि शहरी निवासियों और व्यापारियों की संख्या बढ़ रही है। यह नई व्यवस्था सामान्ती प्रणाली में उपर्युक्त नहीं थी। अंततोगत्वा, इन सभी परिवर्तनों के फलस्वरूप पुनर्जागरण काल में मानववाद के माध्यम से एक पूर्णतः नये मानववादी दृष्टिकोण की उत्पत्ति हुई।

कला और विद्या प्राप्ति के पुनरूत्थान को चौदहवीं शती में उत्पन्न हुए इटली के बड़े बैक व्यवसायी परिवारों (विशेषकर फलोरेन्स शहर के) के द्वारा उत्पन्न यूरोपीय व्यवसाय व्यवस्था के द्वारा आर्थिक समर्थन प्रदान किया गया। इस व्यवसायिक पुनरूत्थान को भारत और अमेरिका के समुद्री मार्गों की खोजों ने विशेष बल प्रदान किया। पुनर्जागरण ने मध्ययुगीन यूरोप के असीमित रूप से परिवर्तित किया और इसने स्वतन्त्र चिन्तन को जन्म दिया। अर्थात् चिन्तकों ने किसी भी प्रकार की स्थापित सत्ता को बिना समालोचना के स्वीकार करना बन्द कर दिया और इस प्रकार वे नई दार्शनिक वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी से सम्बंधित समस्याओं की खोज करने में सनलग्न रहने लगे। फलतः, बुद्धि के युग का सूत्रपात हुआ। पुनर्जागरण काल के पश्चात प्रबोधन काल आया। प्रबोधन काल ने नए–नए अन्वेषकों से समर्थित नवीन प्रवृत्ति उत्पन्न की। इस नवीन आलोचनात्मक प्रवृत्ति ने धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से पूर्णतः स्वतन्त्र दर्शन और विज्ञान का मार्ग प्रशस्त किया।

2.2 महत्वपूर्ण घटनाक्रम और उनके महत्व

1305–1378 – 12 से अधिक शदियों के बाद पोप रोम छोड़कर फ्रांस के एविगनान में रहने लगे। यह बेबिलोनियन केपटिविटि ऑफ चर्च कहा जाता है। इससे चर्च के नेताओं के सम्मान में भारी कमी आई।

1341 – पेट्रार्च, पहले महान मानवतावादी, को रोम में पोएट लोरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया।

1348 – यूरोप में ब्लैक डेथ : बुबोनिक प्लेग ने बड़ी संख्या में जनसंख्या को कम कर दिया। यद्यपि, प्लेग ने आर्थिक पुनर्रोत्थान को जन्म दिया।

1378 – पोप पुनः रोम लौटे किन्तु फ्रांस ने एविगनान में भी एक पोप रखने पर बल दिया। फलतः चर्च का विभाजन हो गया।

1397 – फ्लोरेंस में मेडिकी बैंक की स्थापना। मेडिकी, कला साहित्य का महान संरक्षक, शीघ्र ही नगर शासक बने। फलोरेन्स में भी ग्रीक साहित्य को विश्वविद्यालय में एक विषय में रूप में स्थापित किया गया।

1400–1450 – डोनाटेलो, कलाकार और मूर्तिकार, फ्लोरेंस में फला फूला।

1450 – जोहानगुटेनबर्ग में प्रिटिंग प्रेस का अविष्कार (मुद्रण पहले चीनीयों को ज्ञात था) हुआ और यह लैटिन बाइबिल को मुद्रित करने के लिए उपयोग में लाया गया।

1453 – कांसटेनटिनोपल पर तुर्क की विजय; कई ग्रीक विद्वान इटली में स्थापित हो गये और अपनी पाण्डुलिपियों को भी साथ ले गये।

1479 – इटली वासी (वेनिस के) तुर्की से हार गये; फलतः भारत के लिये प्राचीन व्यापारिक मार्ग बन्द हो गया। पुर्तगालीयों और स्पेनवासी नये मार्गों की खोज करने लगे।

1492 – कोलम्बस भारत की खोज में अमेरिका पहुँच गये।

1495–1498 – लियोनार्डो दा विंची ने द लास्ट सपर पेण्टिंग बनायी।

1498 – वास्कोडिगामा ने भारत आने के लिए समुद्री रास्तों की खोज की और केरल पहुँचे। पुर्तगाली भारत में सबसे पहले यूरोपिय उपनिवेश सत्ता बन गये।

1503–1505 – लियोनार्डो दा विंची ने मोनालिसा की पेन्टिंग की जबकि एन्जेलो ने डेविड की मूर्ति बनायी।

1508–1512 – माइकेल एंजलो ने रोम में पिटेक कैथेडरल के सिस्टेंट चौपेल की छत को पेंट किया।

1517 – मार्टिन लूथर का उदय। उन्होंने जर्मनी में प्रोटेस्टेन्ट धर्म सुधारों को शुरू किया। जिसका अनुसरण स्वीट्जरलैंड में उलरिच जवीगलि द्वारा और फ्रांस में जान कैलविन द्वारा (1530 में) किया गया।

1519 – मध्य और दक्षिण अफ्रीका में स्पेनिस साम्रान्य का विस्तार।

1543 – कापरनिकस द्वारा सूर्य केन्द्रित अभिधारणा का प्रकाशन। जिसके अनुसार पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

1546–1563 – कैथोलिक चर्च ने इटली के ट्रेन्ट में परिषद् का गठन किया और प्रत्युत्तरात्मक सुधारों की शुरूवात की। फलतः, पुस्तकों को प्रतिबन्धित किया गया। यह दक्षिण यूरोप में दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के लिए एक नई चेतना लेकर आया।

1585 – पोप ग्रेगरी XIII ने आधुनिक कलेण्डर को प्रस्तुत किया।

1588 – स्पेन अरमाण्डा (नोसेना) को इग्लैण्ड की प्रथम महारानी एलिजाबेथ प्रथम द्वारा हरा दिया गया। जिसने नयी साम्राज्यवादी शक्तियों जैसे कि ब्रिटिश, फ्रेंच और डच के उदय का मान प्रशस्त किया।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी :

अ) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ब) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) पुनर्जागरण शब्द का क्या अर्थ है?

.....

.....

.....

.....

2) पुनर्जागरण काल की उत्पत्ति की क्या प्रमुख घटनायें थी?

.....

.....

.....

.....

2.3 पुनर्जागरण काल के सांस्कृतिक और दार्शनिक पक्ष

2.3.1 मानववाद

वर्तमान समय में मानववाद को मानवता के कल्याण से सम्बंधित गम्भीर दृष्टिकोण के रूप में लिया जाता है। यद्यपि, पुनर्जागरण काल के समय में मानववादी उसे कहा जाता था जो मानविकी के नाम से जाने जाने वाले पांच विषयों का ज्ञाता होता था। इटली के विश्वविद्यालय मानविकी, जिसमें व्याकरण, भाषण देने की कला, काव्य, इतिहास और नैतिक दर्शन आदि सम्मिलित थे, के लिये प्रसिद्ध थे। मानवविद प्रायः अपने ज्ञान के लिए अपनी रूचि के लिए इन विषयों का अध्ययन करते थे न कि धर्मशास्त्र को बल प्रदान करने के लिए। मानवविदों का दृ ष्टिकोण स्कालिस्टिकवादियों, जिन्होंने मध्ययुगीन परम्परा का अनुसरण किया था, से बिल्कुल भिन्न था। इन मानवविदों को सतही स्कालिस्टिक विचारकों, जो अरस्तू के दर्शन से परे सोचने में असमर्थ थे, के बारे में भी सोचना पड़ा।

पुनर्जागरण मानववाद प्राचीन सभ्यता की शास्त्रीय लैटिन भाषा की पाण्डुलिपियों की पुनः खोज के साथ इटली में प्रारम्भ हुआ। बाद में 1453 में कान्सेटिनोपल के पतन के साथ ही इटली में बहुत से विद्वान प्रवसन कर गये और अपने साथ मूल्यवान पाण्डुलिपियां लाये। फलतः, ग्रीक भाषा और साहित्य का अध्ययन पहले की तुलना में अत्यधिक प्रचलित हुआ। प्लेटो ओर अन्य पूर्व के दार्शनिकों को नये दृष्टिकोण से पढ़ा गया। इन सभी का समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे लेखन, साहित्य, कला स्थापत्य. दर्शन, धर्म, विज्ञान आदि पर सीधे प्रभाव पड़ा। आगे. चल के इस सकारात्मक दृष्टिकोण ने विद्वानों को इन विषयों का अध्ययन स्वयं के ज्ञानार्जन के लिये करने के लिये प्रेरित किया न कि धर्मशास्त्र को बल प्रदान करने के लिये।

2.3.2 कला और स्थापत्य

पुनर्जागरण काल की स्थापत्य कलाः शास्त्रीय ग्रीक मन्दिरों और रोमन भवनों के मॉडल का अनुसरण करती है। मेहराबी छत वाले चर्चों की तुलना में गुम्बदकार छतों वाले चर्चा का निर्माण तेजी से बढ़ रहा था। रोम में सेंट पीटर वैसेलिका (1506–1667) का निर्माण इस काल का प्रतिनिधित्व करता है। इस चर्च का गुम्बद प्राचीन रोम के देवालयों के मॉडल के अनुसार निर्मित था। इस काल में स्थापत्य कला का निरपेक्ष रूप उभर कर सामने आया। परिणाम स्वरूप, इटली में अनेक धनाढ्य राज पुरुषों और राजकुमारों ने अपने महलों का निर्माण इसी

निरपेक्ष स्थापत्य कला के अनुसार कराया। फ्रांस में अनेक ग्रामीण भवन इसी काल में निर्मित हुए। मूर्तिकारों व चित्रकारों ने प्राचीन स्थापत्य कला के मॉडल, जो मध्यकालीन स्थापत्य कला से कही अधिक प्राकृतिक और जीवन्त थी, का अनुसारण किया। कलाकारों ने परम्परा की अपेक्षा मानवीय शरीर का अध्ययन किया और विभिन्न अनुपातिक मिश्रणों का ज्ञान विकसित किया। चित्रकारों ने दूर की वस्तुओं को पास की वस्तुओं की तुलना में छोटी के रूप चित्रित करके चित्रकारी का एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

इटली की चित्रकला सामन्यतः धार्मिक प्रकृति की बनी रही। राफेल, माईकल ऐन्जलो और लियोनार्डो दा विंची अपनी चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हुए। संगीत की कला की उत्पत्ति पुनर्जागरण काल में ही हुई। नये यंत्रों की खोज हुई। छंदबद्धता का प्रयोग बढ़ रहा था। यद्यपि, अभी भी अधिकांश संगीत या तो राजदरबारों के लिये या फिर धार्मिक उद्देश्यों के लिये निर्मित किया जा रहा थ। इस काल का संगीत वर्तमान यूरोपिन संस्कृति का अभिन्न अंग है।

2.3.3 साहित्य

पुनर्जागरण काल का आरम्भ मूलतः अनेक प्राचीन ग्रीक व रोमन भाषा के लेखनों की पुनः खोज और अनुवाद से हुआ माना जा सकता है। होमर के *इलियाड* और *ओडसी,* जिन्हें प्रारम्भ में केवल लैटिन भाषा के संक्षिप्त अभिलेखों के माध्यम से ही जाना जाता था, को अन्य साहित्य अभिलेखों की तरह अब पूर्णतः पढा जा सकता था। इससे शास्त्रीय शैली, जिनका अनुसरण मानवविदों और कवियों द्वारा किया गया, के कुछ निश्चित लक्षणों का पुनः स्थापन हुआ। फलतः, पोप ने शास्त्रीय साहित्य के संरक्षण हेतु 1447 ई.वी. में वैटिकन पस्तकालय की स्थापना की। मानवविद् विद्वानों जोकि भाषाओं में पारंगत थे को पोप राजाओं और धनाढ्य सामन्तों के सचिवों के रूप में नियुक्त किया जाने लगा। प्रारम्भ में उनके पत्र लेटिन भाषा में लिखे जाते थे लेकिन चौदहवीं शताब्दी के अन्त तक क्षेत्रीय भाषा सभी जगह छा गयी थी। बहुत से मानवविद अपनी कविताओं के लिए भी जाने जाते हैं। 1341 ई. में पेट्रार्क, प्रारम्भिक मानवविद, को पोएट लारिएट की उपाधि से सम्मानित किया गया। मानवविद् अपने लेखन कार्यों द्वारा अपने विचारों का प्रसार करने लगे। बाइबिल के ग्रीक संस्करण ने यह दिखाया कि

लैटिन संस्करण कई स्थानों पर ग्रीक संस्करण से, जिसे अब भूल माना जाने लगा था, से भिन्नता लिये है। इसने एक नये धर्मिक आन्दोलन का आरम्भ किया। साथ ही, राजनीति, जो सामन्तवादी प्रथा के ह्रास के कारण शीघ्रता से बदल रही थी, का मैकायवेली की द प्रिन्स, थॉमस मोर की यूटोपिया, रेबेलिस की गारगान्टुआ, तथा और अन्य लेखन कार्यों में विशलेषण प्रस्तुत किया गया। सरवेन्टीस की प्रसिद्ध डॉन क्यूरोट ने अप्रचलित सामन्तवादी व्यवस्था के विपरीत मानवीय दृष्टि को अपनाया। यूरोप के महान नाट्य लेखक विलियम शेक्सपियर पुनर्जागरण काल के बाद के काल में उभर कर सामने आये।

मध्ययुग के दौरान पाण्डुलिपियों को हाथों से लिखा जाता था। प्रिन्टिग प्रेस के आगमन ने यह कार्य आसान बना दिया और इस प्रकार शिक्षा और ज्ञानार्जन के प्रसार का माध्यम बन गया। यूरोप में इसका पदार्पण अरबों के द्वारा किया गया। 1450 ई. में स्पेन में जान बुटेनबर्ज, जो एक जर्मन था, प्रिटिंग प्रेस की खोज की और प्रसिद्ध *गुटेनबर्ज बाइबिल* को लैटिन भाषा में छापा। अन्ततोगत्वा प्रिटिंग छपाई के माध्यम से पढ़ने और सीखने की प्रवृत्ति को आम लोगों के बीच वहन करने योग्य साहित्य, सार्वजनिक पुस्तकालय और समाचार पत्रों के द्वारा विस्तारित किया गया।

2.3.3 धर्म

बेबीलोन द्वारा चर्च पर आधिपत्य और प्रोटेस्टेन्ट सम्बन्धित सुधार पुनर्जागरण काल की दो प्रमुख धार्मिक घटनाएं थी। पोप सामान्यतः रोम से सम्बंधित थे। लेकिन कुछ राजनीतिक कारणों से उनमें से एक ने अपने आप को दक्षिणी फ्रांस के एविगान में स्थायी रूप से स्थापित करने का निर्णय लिया। बाद में जब पोप ने पुनः रोम आने का मन बनाया तो उसका विरोध हुआ। परिणाम स्वरूप, दो पोपों, एक एविगान में और दूसरा रोम में, का चुनाव किया गया। इसने इसाई समाज में दरार उत्पन्न की और चर्च के सम्मान को खण्डित किया। यह स्थिति 1417 तक रही। पोप धर्म निरपेक्ष मामलों के प्रति चिन्तित रहे तथा वृहद मात्रा में धन का संचय रोम में किया। इसके ठीक सौ वर्ष पश्चात् 1517 में जर्मन सन्यासी मार्टिन लूथर ने कैथोलिक चर्च द्वारा अनैतिक तरीकों से धन के संचय और पैसा लेकर पाप करने वाले को

छोड़ देने की प्रवृत्ति, की कड़ी निन्दा की। उन्होंने धार्मिक प्रथाओं और सरचनाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार पर भी उँगली उठाई। फलतः, समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों ने इस पूरी भ्रष्ट व्यावस्था को परिवर्तित करने की मांग उठाई। अनेक जर्मन राजाओं की सहायता से उन्होंने पोप से स्वतन्त्र चर्च व्यवस्था को स्थापित किया। लूथर ने इसे अंशकालिक तौर पर, जब तक कि रोमन चर्च में व्याप्त भ्रष्टाचार समाप्त नहीं हो जाता/स्थापित किया। किन्तु कुछ अन्य सुधारकों जैसे कि ज्विंगली और कैल्विन ने और अधिक कडे कदम, जैसे कि चर्च में मूर्तियों को नष्ट करना आदि उठाये। अब इस विभाजन को पाटना असम्भव हो गया था। फलतः, इसाई समाज सदैव के लिये दो भागों; प्रोटेस्टेट और कैथेलिक में बट गया।

2.3.5 विज्ञान

मध्ययुगीन समय में अरस्तू के लेखों को वास्तविक प्राकृतिक परिक्षण की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता था। किन्तु पुनर्जागरण खोजों का युग था। इसने लोगों को नयी सोच के लिए प्रेरित किया और उन्हें आधुनिक वैज्ञानिक मानसिकता के योग्य बनाया। मध्ययुग की सबसे महत्वपूर्ण खोज यह थी कि पृथ्वी एक नियत गति से सूर्य का चक्कर काटती है। यह विचार सर्वप्रथम निकोलस कॉपरनिकस द्वारा औद बाद में गैलिलियो द्वारा प्रस्तुत किया गया था। इसे वस्तुतः 'कापरनिकस क्रान्ति' के नाम से जाना जाता है। इस खोज के पश्चात मानव विश्व का केन्द्र नहीं रह गया था। इसने यूरोपियन विश्व–दृष्टि में नाटकीय परिवर्तन किया। खगोलशास्त्र की ऐसी खोजों और साथ ही मानव शरीर के विस्तृत वर्णन और विलियम हार्वे द्वारा रक्त प्रवाह प्रणाली की खोज के परिणाम स्वरूप पुनर्जागरण काल के विद्वानों ने अरस्तू के विचारों पर अंधश्रद्धा को त्याग दिया। अरस्तू के अनुसार, खून लीवर में बनता है। उनके इस सिद्धांत को चुनौती दी गयी। किन्तु सबसे महत्वपूर्ण था परीक्षण और प्रयोग की वैज्ञानिक विधि की खोज जिसके द्वारा अरस्तू गलत सिद्ध हो गये थे। पुनर्जागरण काल के अन्त तक बहुत से यूरोपियन विद्वान यह जान गये थे कि यदि वे विकास करना चाहते हैं तो उनके लिए प्राचीन ज्ञान की ओर जाना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि नये ज्ञान को वैज्ञानिक विधि के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। पुनर्जागरण ने नये युग प्रबोधन युग को जन्म दिया।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी :

अ) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ब) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) पुनर्जागरणकालीन मानववाद से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

2) पुनर्जागरण काल की संस्कृति मध्ययुग की संस्कृति से किस प्रकार भिन्न है?

.....

.....

.....

.....

2.4 पुनर्जागरण काल के प्रमुख विचारक

पेट्रार्क (1304–1374): पेट्रार्क को प्रथम मानवविद् विद्वान के रूप में माना जाता है। उन्हें पोयट लोरेट के रूप में सम्मानित किया गया था। उन्होंने शहर–शहर यात्रा की और अपने साहित्य को इटैलियन और लैटिन भाषा में लिखा। उन्होंने अपने आप को दो युगों के बीच खड़ा पाया। अनेक रूपों में पुनर्जागरण काल के लक्षण उनके लेखकों में दिखाई देते हैं।

निकोलस (1401–64): निकोलस ने अपनी शुरूवात चर्च में अध्ययन के साथ शुरू की और अपनी जीविका का अन्त कथोलिक चर्च के कार्डिनल के रूप में समाप्त किया। वह अपने समय से आगे के व्यक्ति थे। उन्होंने कॉपरनिकस के इस सिद्धांत का पूर्वानुमान कर लिया था कि पृथ्वी ब्रह्माण्ड के केन्द्र में नहीं है। उन्होंने अपनी प्राचीन पाण्डुलिपियों के अध्ययन के माध्यम से प्रमुख योगदान दिया। वह अपनी पुस्तक ऑन लर्नड इगनोरेंस में प्रस्तुत दर्शन के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अरस्तू के दर्शन की आलोचना की और कहा कि हम केवल अनुमानित/सन्निकट वास्तविकता का ज्ञान ही प्राप्त कर सकते हैं। इस ज्ञान को हम अनुमानित ज्ञान कहते हैं। यद्यपि, वे ज्ञान की किसी विशेष शाखा से सम्बंध नहीं रखते थे मगर उन्होंने प्लेटो के प्रत्यय सिद्धांत को पुनर्जागरण काल में एक एक नयी दिशा दी।

डेसीडेरियस इरासमस (1466–1536): हालैण्ड के रोटेडर के निवासी थे। पुनर्जागरण काल के मानवविदों में वे सबसे अग्रणी थे। उन्होंने मानविकी के महत्व के प्रसार के लिये बहुत कुछ किया। उन्होंने ग्रीक भाषा में 1516 ई.वी. में *न्यू टेस्टामेन्ट* प्रकाशित किया। इसके धर्म के क्षेत्र में विस्तृत परिणाम हुए। इसने प्रदर्शित किया कि अधिकारिक लैटिन भाषा की बाइबिल में कमियाँ थी। उन्होंने प्रेज ऑफ फोली (Prise of Folly) लिखा। इसने व्यंग्य के रूप में उच्च वर्ग और संस्थानों में उपस्थित बुराईयों को स्पष्ट किया। मार्टिन लूथर इरासमस के लेखों से प्रभावित थे। इरासमस के मानववाद के सिद्धांत ने सुधारवाद के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

निकोलो मैकायवली (1469–1527): निकोली मैकायवली इटली के राजनीतिज्ञ थे। वे फलोरिन्स गणराज्य के दरबार में थे। उस समय फलोरेन्स पर मेडिकी फैमिली का वर्चस्व था। 1512 ई.वी, में इन्होंने दरबार छोड़ दिया। फिर इसके बाद उन्होंने अपने विचारों को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया। उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक *द प्रिन्स* थी। यह पुस्तक इटेलियन राजनीति का विश्लेषण करती है और दिखाती है कि जो राजा नैतिक संकोच से बाध्य नहीं होगा वही न केवल अपने नगर में शासन करने में बल्कि अपने पड़ोसी राज्यों पर अधिकार करने में सफल होगा। इस विचार धारा से मैकायवेलवादी, वह व्यक्ति जो सत्ता के लिये साम–दाम–दण्ड–भेद का प्रयोग करने से नहीं हिचकता, शब्द प्रचलन में आया।

निकोलस कॉपरनिकस (1473–1543): कापरनिकस क्रान्ति (Copernican Revolution) के लिए प्रसिद्ध हुए। उन्होंने बताया कि यदि सूर्य को पृथ्वी की अपेक्षा ब्रह्माण्ड का केन्द्र माना जाए तो आकाशीय पिण्डों की गति के ढंग को अधिक अर्थपूर्ण रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है। उन्होंने ने अपने इस विचार को (जो सूर्यकेंद्रित (Heliocentric Theory) सिद्धांत कहा जाता है) अपनी पुस्तक *दे रिवोल्युसनिबस,* जो उनकी मृत्यु के वर्ष 1543 में प्रकाशित हुई, में प्रकाशित किया। यह एक साहसी सिद्धांत था क्योंकि यह बाइबिल और ग्रीक दर्शन दोनों के विपरीत था। इतिहास में यद्यपि उनके विचारों को स्थापित होने में समय लगा किन्तु बाद में यह पुस्तक विज्ञान के इतिहास में मील का पत्थर सिद्ध हुई।

थामस मूरे (1477–1535): थामस एक प्रख्यात मानवविद व राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से कानून का अध्ययन किया जहाँ पर वे विभिन्न प्रकार के मानवविदों से मिले। इसके बाद में उन्होंने इग्लैण्ड के राजा हेनरी VIII की सेवा लार्ड चांसलर के रूप में की। किन्तु, जब हेनरी VIII ने यह घोषित किया कि इग्लैण्ड के चर्च का प्रमुख राजा है न कि पोप तब थामस मूरे ने इस नियम पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। फलतः, उसे लंदन के टॉवर पर मृत्यु के लिये लटका दिया गया। उसने अपने उपन्यास *यूटोपिया* में ऐसे काल्पनिक गणतंत्र की कल्पना की जो उन दिनों के बुराईयों के विरोध में था। कालान्तर में यह राजनीतिक दर्शन का मुख्य लेखन सिद्ध हुआ।

मार्टिन लूथर (1483–1546): मार्टिन लूथर को जर्मन चर्च में अपने समाज सुधार कार्यों के लिए जाना जाता है। वह ऑगस्टीन क्रम में एक भिक्षु योगी और धर्मशास्त्र के प्रोफेसर थे। रोम के पादरियों के लज्जाजनक, कलंकित जीवन व उनकी धन सम्पत्ति को देखकर वह अत्यधिक आश्चर्य चकित थे। उन्होंने एक दूसरे पादरी जान टेटजेल, जो पापों को क्षमा कराने के बदले में धन लेते थे, के विरूद्ध इसाईयत के सुधार के लिए संघर्ष किया। लूथर ने चर्च के ढ़ाचे को परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया। जर्मन के बहुत से राजकुमारों के समर्थन से एक नये चर्च, जो बाद में लूथर चर्च के नाम से जाना गया, की स्थापना की गई। यह चर्च एक मात्र बाइबिल के सिद्धांतों पर आधारित था।

जान काल्विन (1509–1564): जान काल्विन फ्रेंच के थे। उन्होंने अपनी पुस्तक *इन्सटिट्युटस ऑफ द क्रिसचियन रिलिजन* में प्रोस्टेन्ट के सिद्धांतों को एक सुव्यवस्थित ढंग से प्रतिपादित किया। उन्होंने बाइबिल के सिद्धांत को महत्व प्रदान किया और अन्य सभी व्यवहारों को निषेधित कर दिया। वे पूर्व नियति में विश्वास करते थे। पर्व नियति के अनसार ईश्वर ने सभी व्यक्तियों के लिये स्वर्ग या नरक का पूर्व निर्धारण किया हुआ है। फ्रेंच प्रोटेस्टेन्ट समुदाय, जो बाद में यूनाट के नाम से जाना गया, ने इस सिद्धांत को स्वीकार किया। उनके फ्रांस को छोड़ जेनेवा, स्वीट्जरलैंड में चले जाने पर उनके अनुयायीयों ने पूरे नगर पर काल्विन के सिद्धान्तों के आधार पर शासन किया। यह आन्दोलन हालैण्ड और स्काटलैण्ड में भी चला।

गियोर्डानो ब्रूनो (1548–1600): उनके धर्म, समाज, मानव जीवन पर विचार समकालीन विद्वानों से भिन्न थे। उन्होंने बताया कि तर्क ही ज्ञान का स्रोत है। कॉपरनिकस मॉडल सत्य है और ग्रह्माण्ड अनन्त आकार का है। उन्होंने यह भी बताया कि ब्रह्माण्ड दो सिद्धांतों; पदार्थ और आत्मा पर बना हुआ है। ये दोनों एक ही पदार्थ के दो पक्ष हैं। उनका यह विचार स्पिनोजा के समान था। उन्हें ईशनिन्दा के अपराध में 16वीं शताब्दी में मृत्यु दण्ड के रूप में फाँसी दे दी गयी।

फ्रांसिस बेकन (1561–1626): एक बौद्धिक सुधारक थे। इन्होंने बहुत से शासनिक पदों को ग्रहण किया। इग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम के शासनकाल में इन्होंने *नोवम ऑरगेनम* में नये ज्ञान के सिद्धांत, जो आगमन के सिद्धांत पर आधारित था, के निर्देशों को प्रतिपादित किया। उनके अनुसार ज्ञान प्राप्ति में निगमन और आगमन दोनों पद्धतियों की आवश्यकता होती है। हम केवल बुद्धि से नहीं सीख सकते बल्कि ज्ञान के लिये अनुभव की भी आवश्यकता होती है। उनके यह निर्देश आज भी वैज्ञानिक खोजों में प्रयुक्त किये जाते

विलियम शेक्सपियर (1564–1616): विलियम शेक्सपियर पुनर्जागरण काल के नाट्य लेखक के रूप में जाने जाते हैं। उनके ऐतिहासिक नाट्य, हास्य और त्रासदी मानव व्यवहार को गम्भीरता से समझने में सहायक हैं और उनका योगदान आधुनिक अंग्रेजी साहित्य में (अतुल्य)

है। दूसरे, उन पुनर्जागरण काल के लेखकों के अनुसार उन्होंने भी अपने कार्यों में शास्त्रीय प्रकरणों का उपयोग किया।

जाहन केपलर (1571–1630): जान केपलर एक जर्मन खगोलशास्त्री व गणितज्ञ थे। वह पाइथागोरस के विचारों को परिवर्तित करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि ब्रह्माण्ड ज्यामिति सिद्धान्तों पर संगठित है। उन्होंने इस प्राचीन सिद्धांत का विरोध किया कि ग्रहों की कक्षा गोलीय नहीं है। उन्होंने इस प्राचीन सिद्धांत कि ग्रहों की कक्षाएं वृत्ताकार है का विरोध किया। इसके विपरीत, केपलर ने ग्रहीय गति सम्बंधि तीन नियमों का प्रतिपादन किया और दिखाया कि ग्रहों की कक्षा का आकार अण्डाकार है। माना जाता है कि उनका गैलिलियों से पत्र व्यवहार था।

2.5 पाश्चात्य दर्शन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों का महत्व

पुनर्जागरण काल की निम्नलिखित घटनाओं ने पश्चिमी दर्शन के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया :

- स्वीकृत व्याख्याओं के विपरीत मूल ग्रन्थों और स्रोतों को पढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ी। मूल ग्रन्थों के प्रति यह रूचि किसी अन्य सामूहिक रूप से स्वीकृत प्रारम्भ बिन्दू की अपेक्षा मानव–अनुभव की उपत्ति के अन्वेषण सम्बंधि आधुनिक दर्शन की असंख्य परियोजनाओं के समरूप थी। बाद की इकाईयां यह दिखाएगी कि बुद्धिवादियों ने मन और इसकी शक्ति को अनुभव और ज्ञान का आरम्भिक बिन्दु स्वीकार करते हैं। जबकि अनुभववादी अनुभूतियों और उनके द्वारा प्रदर्शित विषयों को ज्ञान और अनुभव के प्रारंभिक बिन्दु के रूप में स्वीकार करते हैं।
- मूल ग्रन्थों के प्रति रुचि का परिणाम यह हुआ कि धीरे–धीरे विद्वानों का ध्यान स्कालिस्टिक और अरस्तूवादी चिन्तन से परे होने लगा और उन्होंने एक नयी विश्व दृष्टि का निर्माण किया, प्लेटोवाद को पुनरूद्वार करने का प्रयास किया।

- धार्मिक रूचियों के विपरीत मानववादी लगावों का प्रथम प्रभाव ज्ञान के निरपेक्षीकरण और यूरोपीयन चेतना के निरपेक्षीकरण के रूप में दिखाई दिया। वास्तव में हम आज जिन मानववादी मूल्यों को देखते हैं वे मानववादी धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण का ही परिणाम हैं न कि धार्मिक दृष्टिकोण का। मानववाद का समकालीन यूरोपिय दार्शनिक रूचियों पर सीधा प्रभाव पड़ा।
- इस काल के धार्मिक झंझावतों के कारण ही बाद के सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में धर्म के प्रयोग को वर्जित समझा गया। यही कारण है कि मध्यकालीन दर्शन की तुलना में आधुनिक और समकालिन दर्शन धार्मिक समस्याओं से हटकर मानव और ज्ञान के सामाजिक पक्ष से अधिक सम्बंधित है।
- कलात्मक अभिव्यक्ति (कला, मूर्तिकला, वास्तुकला और संगीत में) में रचनात्मकता पर बल ने मध्कालीन सौन्दर्यशास्त्रीय शैली के उपयोग को हतोत्साहित किया। इसकी प्रतिध्वनि दर्शन के क्षेत्र में भी सुनाई दी। अब दर्शन में दार्शनिक जाँच–पड़ताल के लिये चिंतन के नए आरम्भिक बिन्दुओं में रचनात्मकता को बढावा दिया जाने लगा।
- छपाई का अविष्कार और साहित्य के प्रसार ने दार्शनिक तथ्यों को व्यापक बना दिया और यरोप के सभी भागों में पहुंचा दिया। मद्रण ने शिक्षा (दार्शनिक कार्यों के प्रसार के साथ) को अपेक्षाकृत अधिक सुलभ और लोकतांत्रिक बना दिया। विशेष रूप से पाण्डुलिपियों के स्थानीय भाषाओं में अनुवाद ने पहली बार साहित्य एवं दर्शन को व्यापक रूप से फैलाया।
- इस समय में सामन्ती सामाजिक रचना व सामन्ती मानसिकता का पतन हुआ। परिणमस्वरूप, प्रोटेस्टेन्टवाद से सहायता प्राप्त करके पूँजीवाद का अवतरण हुआ और तेजी से बढ़ा। इन सभी का सामाजिक व राजनैतिक दर्शन के संदर्भ में, विशेष रूप से माक्सवाद के संदर्भ में जो पूँजीवाद की प्रक्रिया से उत्पन्न था, विशेष अर्थ था। आधुनिक वैश्वीकरण की अवधारणा का विकास पूँजीवाद में निहित है और उसकी शुरूवात इसी युग से मानी जाती है।
- कोपरनिकस क्रांति ने यूरोप में वैज्ञानिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। एक बार पुनः धार्मिक रुचियों और नियंत्रण ने अधिक अनुभववादी वैज्ञानिक प्रवृत्तियों और पडतालों के

लिए मार्ग प्रशस्त किया। इसका परिणाम 17वीं शती के आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में तेजी, सामान्य 17वीं और 18वीं शताब्दी के प्रबोधन काल, प्रत्यक्षवाद, और समकालीन दर्शन की कई अन्य मानव केन्द्रित परियोजनाओं की उत्पत्ति के रूप में सामने आया।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी :

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) पुनर्जागरण काल के प्रमुख विचारकों का उदाहरण देते हुए उनके योगदान पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

2) पश्चिमी दर्शन में पुनर्जागरण काल के महत्व को समझाओ?

.....

.....

.....

.....

2.6 सारांश

आधुनिक प्राश्चात्य दर्शन को यूरोप में उस समय में प्रचलित संस्कृति जैसे–पुनर्जागरण व प्रबोधन के बिना नहीं समझा जा सकता है। इस इकाई में हमने पुनर्जागरण की आधारभूत संस्कृति को चित्रित किया है। हमने इसकी शुरूवात पुनर्जागरण काल के आधारभूत दृष्टिकोण को समझने का प्रयास इस समय की सबसे महत्वपूर्ण और निर्धारक घटनाओं पर प्रकाश डालने के माध्यम से किया है। फिर, हमने उसकी संस्कृति के मुख्य पक्षों और उस समय के दर्शन, प्रमुख विचारों और व्यक्तित्वों, जिन्होंने इस संस्कृति के विकास में प्रमुख योगदान दिया, पर ध्यान केन्द्रित किया है। अंतोगत्वा, हमने इस संस्कृति के महत्व को पाश्चात्य दर्शन के इतिहास के विकास के सन्दर्भ में समझा है।

पुनर्जागरण काल से सम्बंधित इन निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखें : .

- 'पुनर्जागरण' का अर्थ "पुनरोत्थान" है। यह समय चौदहवीं शती से सोलहवीं शती के मध्य –का माना जाता है। इस काल में यूरोप में शास्त्रीय कला, स्थापत्य, और साहित्य के ढंगों व का पुनर्जागरण हुआ। इसे कभी–कभी प्रारम्भिक आधुनिक काल भी कहा जाता है।
- यह समय संस्कृति और सामाजिक उथल–पुथल का समय था। सामान्ती प्रणाली का अन्त व व्यापार का प्रभुत्व स्थापित हो रहा था। इसने आगे चलकर पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को जन्म दिया।
- ग्रीक दर्शन को समझने व सीखने के पुनरोत्थान के साथ पुनर्जागरण का इटली में प्रारम्भ हुआ। इसे धनाढ्य व्यक्तियों और पोपों, जो कला और वस्तुकला के संरक्षक थे, की सहायता प्राप्त थी।
- पाँच मानविकी विषयों (व्याकरण भाषण देने की कला, कविता, इतिहास व नैतिक दर्शन) का अध्ययन अपने ज्ञानार्जन के लिये किया जाने लगा न कि धर्म की सिद्धि के लिये। अतः, पुनर्जागरण काल मानववादी काल बन गया। मानवविदों ने सुधारों की. पृष्ठिभूमि को भी तैयार किया जिसने पुनः धार्मिक परिवेश को प्रभावित किया।
- इन सभी घटनाओं ने मध्यकालीन दर्शन को धरातल में धकेल दिया और स्वतन्त्र चिन्तन का मार्ग प्रशस्त किया। सीधे प्रकृति के परीक्षण का प्रचलन बढ़ गया। फलतः, सूर्य–केन्द्रित

सिद्धांत (कॉपरनिकस) और आगमन का नियम (बेकन) की खोज से आधुनिक विज्ञान का उद्भव हुआ।

- इस काल में अमेरिका और भारत के समुद्री मार्गों की खोज की गयी।
- इस काल का सबसे प्रमुख अविष्कार प्रिन्टिंग कला का ज्ञान था। प्रिन्टिंग ने ज्ञान का सम्पूर्ण यूरोप में व्यापक प्रसार किया और प्रबोधन के लिये मार्ग प्रशस्त किया।

2.7 कुंजी शब्द

सूर्यकेंद्रित सिद्धांत : इस सिद्धांत का प्रतिपादन कॉपरनिकस के द्वारा किया गया। इस सिद्धांत के अनुसार सौर–मण्डल का केंद्र सूर्य है और पृथ्वी आदि इसी का चक्कर लगाते हैं।

प्रोटेस्टेन्टवाद : यह इसाई धर्मः की तीन प्रमुख शाखाओं में सर्वाधिक नवीन शाखा है। यह सुधारवादी आन्दोलन का परिणाम था। इसके अनुसार, हम आस्था के माध्यम से ईश्वर कृपा द्वारा रक्षित हैं और हमारा बाईबिल में विश्वास है।

सुधारवाद : धार्मिक क्षेत्र में मार्टिन लूथर, केल्विन और अन्य द्वारा लायी गयी क्रान्ति जिसके परिणाम स्वरूप यूरोप में अनेक स्वतन्त्र चर्चों की स्थापना हुई।

पुनर्जागरण : मध्यकाल के बाद यूरोप के इतिहास का 1300 से 1600 तक का काल पुनर्जागरण काल कहलाता है। इसमें शास्त्रीय संस्कृति का पुनरोत्थान हुआ, मानववाद का विकास हुआ तथा यूरोप और अन्य देशों के मध्य समुन्द्री भागों की खोज हुई।

2.8 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

एबागनानो, निकोला, "हयूमनिज्म'', इन द एन्साइकलोपीडिया ऑफ फिलोसोफी, वोल्यू–4 पॉल एंगवर्ड, न्यूयॉर्क एण्ड लन्दन, कालिपर मेक्मिलन पब्लिर्श, 1967, 69–72.

अशवोर्थ, ई.जे., "रेनेशा फिलोसोफी" इन राउटलेज एन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलोसोफी, वोल्यू–8, (ऐडि.) एडवर्ड क्रेग, लन्दन एण्ड न्यूयार्क, राउटलेज, 1998, 264–67.

कोप्लेसटन, फ्रेडरिक, ए हिस्ट्री ऑफ फिलोसोफी वोल्यू–III; ओखम टु सुरेज, लन्दन, बरनस ओटेस एण्ड बाशबोर्ने लिमि., 1953.

डुरा, विल, द हिस्ट्री ऑफ सिविलाइजेसन वेल्यू 5; द रेनेशा, कारोलटन, विल डुरा फाउन्डेसन, 1952.

गिलबर्ट, नील डब्ल्यू., "रेनेशाष, इन द ऐन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफी, वोल्यू–8, सेकण्ड ऐडिसव, (ऐडि.), डोनाल्ड बोरकेरट, न्यूर्याक एण्ड लन्दन, थॉमसन गाले, 2006 421–28.

केली, डोनाल्ड आर., रेनेशा ह्यूमनिज्म, बोस्टन, टवायने, 1991.

क्रेया, जिल, "ह्यूमेनिज्म' इन द ऐन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफी, वोल्यू–4, संक. ऐडिसन, (ऐडि.), डोनाल्ड बोरकेरल, न्यूयाक एण्ड लन्दन, थॉमस गाले, 2006, 477–81.

मेन्चेस्टर, विलियम, ए वल्ड लिट ओनली बाई फायर : द मेडिवल माइन्ड एण्ड द रेनेशा, बोस्टन, लिटिल ब्राउन एण्ड कम्पनि., 1992.

मान फसानी, जॉन, "ह्यूमेनिज्म रेनेशा" इन राउटलेज एन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलोसोफी, वोल्यू–4, (ऐडि.) एडवर्ड क्रेग, लन्दन एण्ड न्यूयार्क, राउटलेज, 1998, 533–41.

पारकिनसन, जी.एच.आर., (ऐडि.), द रेनेशा एण्ड सेविन्टिन सेन्चुरी रेशनेलिज्म, न्यूयार्क, राउटलेज, 1993.

वाटसन, पीटर, आइडियास : ए हिस्ट्री फ्रोम फायर टु फ्रायड, लन्दन, वाइडनफिल्ड एण्ड निकॉलसन, 2005.

वेबसाइटस : .

1) रेनेशा से सम्बंधित स्रोत : www: learner-org/exhibits/renaissance/resources-html

2) मेडिवल स्रोसबुक : www:fordham.edu/halsall/sbooklx/html

3) इटेलियन रेनेशा : history.hanover.edu/courses/italren-html

4) द इन्टरनेट एन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफी : www.iep.utm.edu

5) द स्टेन्डफोर्ड एन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफी : www.plato.stanford.edu

6) द मेटा ऐन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफी : www.ditext.com/encyc/frame-html

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पुनर्जागरण का अर्थ है. पुनरोत्थान। मध्यकाल के बाद यूरोप के इतिहास का 1300 से 1600 तक का समय पुनर्जागरण काल कहलाता है। इसमें शास्त्रीय संस्कृति का उत्थान हुआ, मानववाद का विकास हुआ, तथा यूरोप और अन्य देशों के मध्य समुन्द्री मानों की खोज हुई।

2) निम्नांकित घटनाओं ने पुनर्जागरण में योगदान दिया :

   क) इटली में बड़े व्यावसायिक परिवारों का उदय

   ख) कास्टेन्टिनोपाल के पतन के बाद ग्रीक विद्वानों का इटली में अगमन

   ग) शहरीकरण में वृद्धि

   घ) प्राचीन पुस्तकों की पुर्नखोज और प्रेन्टिग प्रेस का अविष्कार

   ड.) मानवीकि के अध्ययन में रूचि का प्रसार।

बोध प्रश्न 2

1) पुनर्जागरण के समय मानववादी वह था जो मानवीकी के पांच विषयों (व्याकरण, भाषण कला, कविता, इतिहास और नैतिक दर्शन) का ज्ञाता होता था। स्कालिस्टिकों के विपरीत मानववादी इन विषयों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते थे और उनका अध्ययन स्वयं के ज्ञान वृद्धि के लिये करते थे न कि धर्मशास्त्र को प्रमाणित करने के लिये।

2) मध्यकालीन और पुनर्जागरण संस्कृति के मध्य कुछ अन्तर निम्नवत हैं :

   क) मध्यकालीन यूरोप में सामन्ती व्यवस्था थी किन्तु पुनर्जागरण काल में अनेक नगर–राज्य, राष्ट्र–राज्य और प्रथम उपनिवेशिक साम्राज्य उपस्थित थे।

   ख) मध्यमकालीन शिक्षा धर्मशास्त्र से नियन्त्रित थी, परन्तु पुनर्जागरण काल में मानववादी स्वयं के ज्ञानार्जन के लिये अध्ययन करते थे। प्रिन्टिंग प्रेस के कारण, पुनर्जागरण काल में पुस्तकों का भारी प्रसार हुआ।

   ग) पुनर्जागरण कला, स्थापत्य, और साहित्य शास्त्रीय मॉडल से प्रभावित थे जबकि मध्यकाल में ऐसा नहीं था।

   घ) मध्यकाल में प्रभावी अरस्तू के दर्शन ने पुनर्जागरण काल में अपना प्रभाव खो दिया और प्लेटो का दर्शन पुनः महत्वपूर्ण हो गया।

बोध प्रश्न 3

1) इस काल में निम्न चिन्तक महत्वपूर्ण थे

   क) पेट्रार्क : वह प्रथम बड़े मानववादी थे। उन्होंने अपनी कविताओं में शास्त्रीय शैली को विकसित किया।

   ख) इरासमस : इन्होंने सम्पूर्ण यूरोप में मानववादी मूल्यों का प्रसार किया।

   ग) कापरनिकस : इन्होंने ब्रह्माण्ड का सूर्य केन्द्रित सिद्धांत प्रस्तुत किया।

घ) थॉमस मूरे : इन्होंने राजनीतिक दर्शन पर यूटोपिया लिखा।

ड.) माट्रिन यूथर : इन्होंने चर्च में सुधार किये।

च) फ्रान्सिस बेकनः इन्होंने आगमन सिद्धान्त पर विशेष बल दिया।

2) पुनर्जागरण दर्शन के इतिहास में मिल का पत्थर है। यह आविष्कारों का समय था। इसे माइकलेट ने 'विश्व की खोज' और 'मानव की खोज' का काल कहा है। इस समय के महत्वपूर्ण विकास हैं; कॉपरनिकस क्रान्ति, प्रिन्टिग प्रेस का अविष्कार, वैज्ञानिक परीक्षणों में आगमन विधि का प्रयोग। इन सभी ने मिलकर स्कालिस्टिक धर्मशास्त्र के प्रभाव को समाप्त कर दिया और इस प्रकार, दर्शन को धर्मशास्त्र की अधीनता से मुक्त कर दिया। पुनर्जागरण काल के लेखकों ने अरस्तू जैसी स्थापित सत्ताओं की सीमाओं को पहचान लिया और परिणाम स्वरूप स्वतन्त्र चिन्तन, जिससे आधुनिक दर्शन का जन्म हुआ, का उद्भव हुआ।

इकाई 3 प्रबोधन*

रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 परिचय

3.2 इस काल में होने वाली प्रमुख घटनायें

3.3 प्रबोधन काल की संस्कृति और दर्शन के आयाम

3.4 प्रबोधन काल के महान व्यक्ति

3.5 पाश्चात्य दर्शन के लिए प्रबोधन का महत्व

3.6 सारांश

3.7 कुंजी शब्द

3.8 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य प्रबोधन का सिंहावलोकन और इसके पाश्चात्य दर्शन के विकास पर पड़े प्रभाव को बताना है। जैसा कि प्रायः होता है किसी समय का दर्शन उस समय की संस्कृति से निकट का सम्बन्ध रखता। इसलिये यदि हमें 'आधुनिक पाश्चात्य दर्शन' को समझना है, तो यह आवश्यक है कि हम प्रबोधन काल की प्रभावी संस्कृति से परिचित हों। इस संस्कृति

* डॉ. कीथ डि'सूज़ा, सें. पीयस महाविद्यालय, मुम्बई। (यह इकाई बीपीवाई–008 की "प्रबोधन" इकाई का संशोधित संस्करण है)। अनुवाद– आनन्द रवि, फरीदाबाद।

का उच्च बिन्दु 18वीं शती था। लेकिन हम इस इकाई में प्रबोधनकाल के उद्गम को समावेशित करते हुए आगे बढ़ेंगे और इस प्रकार अपने अध्ययन को 1600–1800 तक के समय तक विस्तारित करेंगे। (याद करो कि इसके पहले की इकाई में चित्रित पुनर्जागरण काल यूरोप की चेतना पर सरसरे तौर पर 1400–1600 तक प्रभावी था, किन्तु हमने अपने अध्ययन को वहां भी 1300–1600 तक विस्तृत किया था)।

इस इकाई की समाप्ति पर छात्र को इन तथ्यों से परिचित हो जाना चाहिये :

- प्रबोधन का आधारभूत ज्ञान
- इस काल की बड़ी घटनायें और उनका महत्व
- इस काल की महत्वपूर्ण दार्शनिक परियोजनाएं
- प्रमुख विचारक और व्यक्तित्व तथा उनका योगदान
- आधुनिक पाश्चात्य दर्शन के लिए इस काल का महत्व

3.1 परिचय

17वीं शताब्दी (देकार्त और फ्रांसिस बेकन का युग) को सामान्य रूप से बुद्धि या विवेक का काल कहा जाता है। जब कि 'प्रबोधन' प्रायः 18वीं शती तक सीमित हैं। किन्तु, दोनों के मध्य वास्तव में कोई स्पष्ट विभाजन नहीं है। इसलिए जब हम 'प्रबोधन' की चर्चा करेंगे, हम उन घटनाओं की भी चर्चा करेंगे जो यूरोप में 16वीं–18वीं शताब्दी में हुई। दार्शनिक, वैज्ञानिक और राजनैतिक समस्याओं को हल करने के लिए बुद्धि को मुख्य सत्ता के रूप में स्वीकार करने की प्रवृत्ति 'प्रबोधन' काल की प्रधान विशेषता थी। जीवन के लिए बुद्धि आधारित दृष्टिकोण ने पुनर्जागरण काल को समाप्त कर दिया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पाश्चात्य मन इतिहास. के एक नये चरण में प्रवेश कर कर गया था। अब किसी को अपने सिद्धांत को प्लेटो, अरस्तू या पहले के किसी और प्रभावी विचारक के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत से सिद्ध नहीं करना था। प्रत्येक व्यक्ति निरीक्षण, प्रयोग और निष्कर्ष के साधनों से मानव ज्ञान के भंडार में योगदान

करने के लिये स्वतन्त्र था। वैज्ञानिक मनः स्थिति के साथ एक नवीन युग की उत्पत्ति हो चुकी थी।

'प्रबोधन' के लगभग समस्त आयाम दर्शन के इस आधारभूत परिवर्तन से जुड़ गये थे। यह परिवर्तन वास्तव में अल्परूप से पुनर्जागरण काल में ही प्रारम्भ हो गया था। लेकिन प्रबोधन विशेष रूप में यूरोप का जागरण था, जोकि इंग्लैण्ड में प्रारम्भ हुआ था। यह वह समय था जब दार्शनिक विचार, साधारण व्यक्ति के दिन प्रतिदिन के जीवन को परिवर्तित करने में भूमिका निभाने लगे थे। पूर्ववर्ती सांस्कृतिक परिवर्तनों जैसे कि पुनर्जागरण, से भिन्न प्रबोधन विशेष सामाजिक वर्ग तक सीमित नहीं था बल्कि सामान्य जनता को विज्ञान, शिक्षा और, लोकतांत्रिक मूल्यों द्वारा सीधे–सीधे प्रभावित कर रहा था। जहाँ भी लोगों की नवीन आंकाक्षायें बाधित थी, वहीं पर विरोध हुआ और उसने आश्चार्य जनक घटनाओं, जैसे कि अमरीकी स्वतंत्रता का युद्ध और फ्रांसीसी क्रान्ति को जन्म दिया। इंग्लैण्ड फ्रांस और जर्मनी प्रबोधन द्वारा प्रभावित होने वाले सबसे प्रमुख देश थे। इग्लैण्ड से प्रारम्भ करते हुए हम देखते हैं कि 17वीं और 18वीं शताब्दी विज्ञान के अनवरत विकास से प्रभावित थी। विज्ञान दर्शन से सर्वथा पृथक हो गया था। विज्ञान के विकास के परिणाम स्वरूप इग्लैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हुई जिसके द्वारा तकनीक ने इग्लैण्ड का मुखड़ा परिवर्तित कर दिया। इसके साथ ही, ब्रिटिश उपनिवेशिक साम्राज्य (भारत वर्ष में ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य) अनवरत वृद्धि कर रहा था। कैप्टन कुक द्वारा आस्ट्रेलिया की खोज हुई। इन उपनिवेशों से व्यापार ने इग्लैण्ड को सम्पन्न बनाया और औद्योगिक क्रांन्ति में ईंधन का कार्य किया।

आओ विचार करें –I

फ्रांस में राजशाही के ख़ात्मा ने किस तरह प्रबोधन में योगदान दिया?

दूसरी और फ्रांस, बारबन राजपरिवार की प्रतिष्ठा से प्रभावित हो रहा था। महान सम्राट लुईस XIV के समय में फ्रांस यूरोप का सांस्कृतिक केन्द्र बन गया और अन्य सभी यूरोपीय राष्ट्र फ्रांस के रीतिरिवाजों की नकल करने का प्रयास करने लगे। प्रत्येक कला और विज्ञान सम्राट और राजदरबार की आवश्यकताओं से प्रभावित था। लेकिन 18वीं शती से फ्रांस के सामान्य लोग सम्राट के प्रति सम्मान खोने लगे और इसकी जगह वे लोग वाल्टेयर और अन्य

क्रान्तिकारी विचारकों के लेखों से प्रभावित होने लगे। परिणाम स्वरूप, सम्राट लुइस XIV को गद्दी से उतार दिया गया और गणतंत्र स्थापित हो गया।

तीस वर्ष के युद्ध के परिणाम स्वरूप जर्मनी छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त हो गया था। आस्ट्रिया और पर्सिया प्रभावशाली थे लेकिन उनमें से कोई भी इस काल में सम्पूर्ण जर्मनी को संयुक्त करने के योग्य नहीं था और जर्मनी को फ्रांस से खतरा बना रहा था। फिर भी, जर्मन दर्शन फला–फूला और प्रबोधन काल के कुछ महान दार्शनिकों, जैसे कि इमैनुअल काण्ट, को जन्म दिया। सामान्य रूप से, प्रोटेस्टेंट राज्यों ने कैथेलिक राष्ट्रों की अपेक्षा प्रबोधन को अधिक तेजी से स्वीकार किया, यद्यपि पुर्तगाल (कैथेलिक) प्रबोधन दर्शन पर आधारित नियमों को जनता क समक्ष लाने वाला प्रथम राष्ट्र था। फ्रांस में, प्रबोधन फ्रांसीसी क्रांति में अपने चरम पर पहुँचा, जबकि जर्मनी में दर्शन अपने उच्चतम बिन्दु पर काण्ट के 'अनुभवातीत प्रत्ययवाद' और हेगेल के 'परम प्रत्ययवाद' के समय में पहुँचा।

प्रबोधन के अन्त में आधुनिक युग का बौद्धिक वातावरण अपने स्थान पर स्थापित हो गया था। शिक्षा विस्तृत रूप से यूरोप के प्रत्येक राष्ट्र में प्रसारित हो गयी था। औद्योगिक क्रांति इंग्लैण्ड में आरम्भ हुई। लेकिन अन्य राष्ट्रों द्वारा भी अपना ली गयी थी। अततः, स्वतंत्रता और लोकतंत्र, आधुनिक युग के शिखर चिह्न, ने स्वयं को इंग्लैण्ड, अमरीका, फ्रांस और धीरे धीरे अन्य यूरोपियन राष्ट्रों में आदर्श रूप में स्थापित कर लिया।

3.2 इस काल में होने वाली प्रमुख घटनायें

1600 इंग्लैण्ड में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना हुई।

1609 केपलर ने अपने पहले दो नियमों पर आधारित *द न्यू एस्ट्रोनामी* को प्रकाशित किया।

1610 गैलिलियो ने *द स्टारी मेसेन्जर* को प्रकाशित किया जिसमें उनकी दूरबीन की खोज की जानकारी और बृहस्पति के चन्द्रमाओं और शुक्र की अवस्थाओं की जानकारी थी।

1618–1648 जर्मनी कैथोलिक और प्राटेस्टेन्ट्स के मध्य तीस वर्ष का युद्ध।

1620 फ्रांसिस बेकन के *नोवम आरगनन* ने अनेक उदाहरणों द्वारा आगमन पद्धति पर आधारित तर्कशास्त्र की एक नवीन पद्धति प्रस्तुत की।

1628 विलियम हार्वे ने रक्त संचार का विवरण प्रकाशित किया।

1632 गैलिलियो गैलिली ने अपनी पुस्तक *डायलाग आन द टू चीफ सिस्टम ऑफ द वर्ल्ड* में कॉपरनिकस के सिद्धांत के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किये। इस पुस्तक ने उन्हें चर्च – के साथ विवाद में ला दिया।

1641 देकार्त के मेडिटेशन का प्रकाशन।

1642–1714 फ्रांस के 'सूर्य सम्राट' लुइस XIV का शासन काल। फ्रांस यूरोपियन संस्कृति का केन्द्र बन गया।

1645 ब्लेज पास्कल द्वारा पहली गणना करने वाले मशीन का आविष्कार हुआ।

1649 सात वर्ष के राजनैतिक युद्ध के उपरान्त इंग्लैण्ड के सम्राट चार्ल्स प्रथम का सिर कलम कर दिया गया। संसद ने राष्ट्र की सत्ता पर अधिकार कर लिया।

1651 थॉमस हॉब्स ने *लेवियाथन* प्रकाशित किया जो राजनीतिक दर्शन पर एक कार्य था।

1687 सर आइजक न्यूटन से *प्रिंसपिया मैथमेटिका* प्रकाशित किया।

1688–89 इग्लैण्ड में स्टूअर्ट राजवंश को उतार फेंका गया और ओरेंज के विलियम (नीदरलैण्ड से) को सम्राट बनने के लिए आमन्त्रित किया गया। 'अधिकारों की घोषणा' के द्वारा संवैधानिक सरकार की स्थापना की गयी।

1690 जॉन लॉक की *टू ट्रिटीज आन सिविल गवर्नमेंट* प्रकाश में आई।

1705 थॉमस न्यूकोमेन द्वारा वाष्प पंप का आविष्कार हुआ।

1721 रॉबर्ट वाल्पोल इंग्लैण्ड के प्रथम प्रधानमंत्री बने।

1740–87 महान फ्रेडरिक द्वितीय पर्सिया का प्रबुद्ध शासक और वालटेयर के मित्र का काल।

1744 और बाद में भारत में प्रभुत्व के लिए आंग्ल–फ्रांसीसी संघर्ष।

1751 डिडराट की *एनसाइक्लोपिडीया* (महत्वपूर्ण विचारकों द्वारा प्रबोधन के आदर्शों को प्रोत्साहित करने के लिए एक बहुग्रन्थी व्याख्या) प्रकाशित होने लगी।

1756–63 सात वर्ष का युद्ध; फ्रांस ने भारत और कनाडा पर अपना प्रभाव खो दिया।

1757 प्लासी का युद्ध : ब्रिटिश बंगाल के पूर्णतः शासक बन गये।

1758 वालटेयर ने *कैनडाइड* पूर्ण किया।

1762 रूसो का *द सोशियल कान्ट्रेक्ट* प्रकाशित हुआ।

1764 बक्सर का युद्धः मुगल बादशाह को पराजित कर ब्रटिश सरकार का पेंशन भोगी बना दिया गया। मराठा भारत में शीर्ष शक्ति बन गये।

1768 कैप्टन कुक ने एंडिवर पर अपनी समुद्र यात्रा प्रारम्भ की।

1769 जेम्सवाट ने उन्नत वाष्प इंजन को अधिकृत किया।

1775–83 अमेरीकी स्वतंत्रता का युद्ध।

1781 इमैनुअल काण्ट ने *ए क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन* प्रकाशित किया। आस्ट्रिया के सम्राट जोसेफ ने जमीनदारों को स्वतंत्र कर दिया।

1798 फ्रांसीसी क्रांति हुई।

1799 नैपोलियन फ्रांस का प्रथम सभासद (बाद में 1804 में सम्राट) बना।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणी :

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) 'प्रबोधन' शब्द से सामान्यतया क्या समझा जाता है?

.....

.....

.....

.....

2) प्रबोधन काल के कुछ परिभाषित करने वाले क्षण कौन से थे?

.....

.....

.....

.....

3.3 प्रबोधन काल की संस्कृति और दर्शन के आयाम

3.3.1 वैज्ञानिक संस्कृति

प्राचीन और मध्यकालीन समय में विज्ञान 'निगमन विधि', से प्रभावित था। यह सामान्यतः स्वीकृत निष्कर्षों (सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से सत्य के रूप में स्वीकार्य) से प्रारम्भ होकर केवल विशेष निरीक्षण करने योग्य प्रकरणों में प्रयुक्त होता है। पुनर्जागरण के पश्चात और विशेष रूप से प्रबोधन काल में, इस निगमन विधि ने 'आगमन विधि' का मार्ग प्रशस्त किया। आगमन निरीक्षणों पर आधारित है। इसके आधार पर नवीन निष्कर्ष निकाले जाते हैं। इसने नये

आविष्कारों को जन्म दिया और 'औद्योगिक क्रान्ति' के लिए मार्ग प्रशस्त किया। इस वैज्ञानिक प्रदर्शन और ज्ञान के स्वरूप ने सामान्य जनता में अधि क प्रतिष्ठा प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिया और वैज्ञानिक, जैसे आइजेक न्युटन और एडमण्ड हैली वैसे ही अपने समय में मुख्य हो गये जैसे कि माइकल ऐन्जलो और लियोनार्दो पुनर्जागरण काल में थे। वैज्ञानिक आविष्कारों, जैसे वाष्प इंजन, का प्रकृति की शक्तियों को नियंत्रित करने में प्रयोग बढ़ने लगा। यात्रा में उन्नति ने संसार को छोटा करना प्रारम्भ कर दिया और विस्तृत ब्रिटिश और रूसी साम्राज्य का विकास किया। यह नवीन ज्ञान फ्रांस के विश्व ज्ञानकोश रचयिताओं द्वारा संकलित किया गया।

यद्यपि, यह कहा जा सकता है कि यह युग गैलिलियों के साथ ही प्रारम्भ हो गया था किन्तु इस समय के सबसे अधिक प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे सर आइजेक न्यूटन। एक ब्रिटिश वैज्ञानिक जिसने गुरूत्वाकर्षण के सार्वभौमिक नियमों की खोज की और दिखाया कि किस प्रकार ब्रह्माण्ड में प्रत्येक वस्तु एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। रसायन शास्त्रियों ने विस्तृत रूप से चार तत्वों की प्राचीन धारण को नकार दिया, जबकि जीव वैज्ञानिकों ने यह दिखाने का प्रयास किया कि मनुष्य–मध्यकाल के लोगों के विश्वास के विरूद्ध–निम्नकोटि के प्राणियों से कई ढंगों से अनिवार्य रूप से समान है। यद्यपि, मनुष्य की 'निम्नता' को, नकारात्मक रूप में न लेकर एक चुनौती के रूप में देखा गया; यथा विज्ञान और तकनीक के द्वारा प्रकृति पर नियन्त्रण करके मानव समाज अधिक से अधिक लोगों का सुख कैसे प्राप्त कर सकता है।

3.3.2 एक नवीन दर्शन का प्रारम्भ

देकार्त ने सभी प्रकार के पूर्व दर्शनों को निरस्त करके प्रबोधन का प्रारम्भ किया। उन्होंने यह घोषणा करके कि वह इस तथ्य के सम्बन्ध में 'मैं सोचता हूँ इसलिये मैं हूँ' (कॉजिटो अरगो सम) पूणतः निश्चित है एक नये निश्चित आधार से प्रारम्भ किया। उनकी यह पद्धति अत्यधिक सफल थी और इस प्रकार वह उस नवीन आन्दोलन का जनक बन गया जिसका उद्देश्य फ्रांसीसी और जर्मन बुद्धिवाद, अंग्रेजी अनुभववाद और अन्ततः जर्मन आदर्शवाद के माध्यम से एक वैध ज्ञानमीमांसा को स्थापित करना था। इस प्रकार, एक नवीन युग 'आधुनिक दर्शन' का

सूत्रपात हुआ। आधुनिक दर्शन ने अत्यधिक प्रभावशाली व्यक्तियों जैसे प्लेटो और अरस्तू पर अधिक निर्भर न होकर उनका केवल उदाहरण के रूप में प्रयोग किया। वस्तुतः, अब ज्ञान का मुख्य स्रोत 'प्रकृति की वृहद पुस्तक' स्वयं थी, और यह पुस्तक अनुभव के आधार पर 'पढ़ी' गयी। क्योंकि विभिन्न लोगों का अनुभव भिन्न–भिन्न होता है अबः सहनशीलता और बहुलता में वृद्धि हुई। फलतः, वैचारिक एवं धार्मिक स्वतन्त्रता की मांग उठने लगी। सन्देहवादीयों ने यह दिखाने का प्रयास, किया कि निश्चित ज्ञान असम्भव है। अन्ततः, ऐसे राजनीतिक दार्शनिक भी थे जो यह मानते थे कि पुरानी व्यवस्था शोषण, कष्ट एवं दासत्व का स्रोत थी और इसे नवीन पद्धति द्वारा स्थान्तरित किया जाना चाहिए।

3.3.3 जन अधिकार का उदय

इस काल में होने वाला आर्चजनक महत्वूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तन एक ऐसे स्थान का उदय था जिसमें व्यक्ति इकट्ठे होकर एक सामान्य जनता के रूप में आ सकते थे। इन सामान्य वृत्तों में काफी हाउस, पढ़ने वाला समाज इत्यादि सम्मिलित थे। अन्तर्राष्ट्रीय पुस्तक व्यापार में वृद्धि और अधिक संख्या में लघु पुस्तकों और समाचार पत्रों के उदय से, संसार के विभिन्न भागों में लोग अधिक से अधकि समान घटनाओं, व्यक्तियों और विचारों को पढ़ रहे थे और चर्चा कर रहे थे। उदाहरण स्वरूप, एडम स्मिथ के अनुसार, 1776 में अकेले ब्रिटेन में प्रतिदिन तैतिस हजार समाचार पत्र बिकते थे। सात वर्ष में वाल्टेयर की पुस्तक की 1,500,000 प्रतियाँ बिकीं। प्रेस के विकास की इस घटना ने, जिसे इमैनुअल काण्ट ने "बुद्धि का न्यायालय" कहा, की स्थापना की। यह एक ऐसा अनौपचारिक न्यायालय था जिसमें लोग और उनके विचारों को या तो स्वीकार किया जाता था या उनकी भ्रत्सना की जाती थी। यह उस समय की राजनीति के लिये महत्वपूर्ण था। साथ ही इसने दर्शन और धर्म पर भी व्यापक प्रभाव छोड़ा।

अब, भिन्न प्रकार की पुस्तकें पढ़ी जाने लगी थी। जहाँ पहले पुस्तकों का अध्ययन आत्मिक विकास के लिए किया जाता था, वहाँ अब विद्वान बौद्धिक उत्प्रेरणा के (जैसा कि वैज्ञानिक साहित्य के प्रकरण में होता है) और ऐसी सूचनाओं के, जो प्रयोग में लाई जा सके (जैसा कि राजनीतिक साहित्य के प्रकरण में होता है), लिए इनका अध्ययन करने लगे।

3.3.4 लोकतान्त्रिक मूल्यों का विस्तार

17वीं शताब्दी में अनेक राजाओं ने 'सम्राट के दैवीय अधिकार' सम्बंधि सिद्धांत को स्थापित करने का प्रयास किया। 18वीं शताब्दी में यह सम्भव नहीं रहा। दिवालिया राजाओं को विधानभवनों और संसदों से अपनी योजनाओं को पूर्ण करने के लिये आवश्यक धन देने के लिए आग्रह करना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि सम्राट की शक्ति को सीमित करना विभिन्न सुदायों के लोगों को अपना अधिकार प्रतीत होने लगा।

इग्लैण्ड में यह अधिकार 'गृह युद्ध' (1640) और 'महान क्रांति' (1688) के द्वारा 17वीं शताब्दी में ही प्राप्त कर लिया गया। शक्ति सम्राट से प्रधानमंत्री की ओर जाना आरम्भ हो गयी। यद्यपि, फ्रांसीसी राजाओं ने 18वीं शताब्दी में प्रतिष्ठा गँवाने के उपरान्त भी शक्ति को त्यागना स्वीकार नहीं किया। इसके परिणम स्वरूप, वाल्टेयर और रूसो जैसे दार्शनिकों के लेखकों ने प्रसिद्धि अर्जित की। उनके विचारों ने यह विचार प्रसारित किया कि समस्त लोगों के पास स्वतंत्रता और समानता का अधिकार है। अन्ततः, अमरीकियों द्वारा फ्रांसीसी सहायता से) स्वयं को गणतंत्रीय स्वरूप की सरकार देने के बाद, सदियों से दमित फ्रांस की सामान्य जनता जाग उठी और सम्राट के विरूद्ध क्रांति करके अपने राष्ट्र और विधि का पुनर्निमाण स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांत पर किया।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणी :

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) प्रबोधन काल ने किस प्रकार 'आधुनिक' मानसिकता को जन्म दिया?

.....

.....

.....

.....

2) प्रबोधन और पुनर्जागरण के प्रारम्भिक काल में क्या समानताएं और विभिन्नताएं थीं?

.....

.....

.....

.....

3.4 प्रबोधन काल के महान व्यक्तित्व

गैलिलियो गैलिलि (1564–1642) इटली के खगोलविद् और गणितज्ञ थे। वे वृहस्पति के चन्द्रमाओं को खोजने के कारण प्रसिद्ध हुए। उन्होंने बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। जब उसने अपने इन दृष्टिकोणों को एक पुस्तक जिसका शीर्षक था डायलाग ऑन द टू चीफ सिस्टम ऑफ द वर्ल्ड में प्रकाशित किया तो उसे भारी विरोध और दण्ड, विशेषकर धर्माधिकारियों से, का सामना करना पडा। 1633 में उन पर बाइबिल का विरोध करने के लिये अभियोग चलाया गया और दण्डित किया गया। वस्तुतः उनके जीवन ने कट्टरपंथी धार्मिक विश्वास और वैज्ञानिक विकास के मध्य विरोध की दुर्घटना को प्रस्तुत किया।

रेने देकार्त (1596–1650) एक फ्रांसीसी दार्शनिक थे वे व्यापक रूप में 'आधुनिक दर्शन के जनक' के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने अपने जीवन कार्य का प्रारम्भ एक सैनिक के रूप में किया। उसने अपने विश्राम के क्षणों को दार्शनिक समस्याओं पर चिन्तर करने में लगाया। अनिश्चितता के काल में, उन्होंने स्कालिस्टिक पद्धति को नकारते हुए चिन्तनमय विषयी की निश्चित युक्ति से प्रारम्भ किया। इससे उन्होंने अपना (आत्मा का) अस्तित्व सिद्ध किया। इस प्रकार उन्होंने, अपने सम्पूर्ण दर्शन को गणितीय ढंग से निर्मित किया। (वह एक अच्छे गणितज्ञ थे और निर्देशांक ज्यामितीय में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया था) उन्होंने अपनी दार्शनिक

प्रतिक्रियाओं को ढेर सारे लेखन कार्यों जैसे *डिस्कोर्स ऑन मेथड एण्ड मेडिटेसन ऑन फर्स्ट फिलोसाफी* में प्रकाशित किया।

ब्लेज पास्कल (1623–1662) एक फ्रांसीसी गणितज्ञ, भौतिकविद् और दार्शनिक थे। दबाव (Pressure) की वैज्ञानिक इकाई उसके नाम पर है। अल्पायु में ही, उन्होंने पहली गणना करने वाली मशीन का अविष्कार किया। अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ–साथ उनके अन्दर मानव–प्रकृति की गहन समझ थी। इसका अन्वेषण उन्होंने अपने लेखन कार्य पेनसीस (Pensees) अर्थात विचार में किया। उनका विश्वास था कि दर्शन सन्देह को जन्म देत और मनुष्य की सच्ची प्रसन्नता धर्म में अवस्थित है। उसका 'दाँव' तर्क यह दिखाता है कि यदि हम ईश्वर के अस्तित्व को लेकर निश्चित नहीं हैं, तो यह अधिक विवेकपूर्ण है कि हम ईश्वर में विश्वास करें (यह दाँव लगाएं कि ईश्वर अस्तित्व में है और उसी प्रकार अपना जीवन बिताएं) न कि एक नास्तिक बनें।

बेनेडिक्स (बरूच) स्पिनोजा (1632–1677) एक डच यहूदी (बाद में इसाई), बुद्धिवादी दार्शनिक थे। उन्होंने अपने दर्शन में देकार्त की तरह ज्यामितीय विधि का प्रयोग किया। वह इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मन और पदार्थ एक ही वस्तु के दो आयाम हैं। यह उन्हें सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण पर ले आया। सर्वेश्वरवाद के अनुसार, सभी चीजें किसी न किसी ढंग से ईश्वर में निहित हैं और प्रकृति ईश्वर की अभिव्यक्ति है। उन्होंने एक खुले विचारों वाली और उदार शासन व्यवस्था का प्रस्ताव रखा। वस्तुतः वह अपने समय से आगे के विचारक थे। तथापि, उनके दृ ष्टिकोण को 17वीं शती के यूरोप में आसानी से स्वीकार नहीं किया गया।

जान लॉक (1632–1704) ने अपने निबन्ध कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेन्डिग से दर्शन में बुद्धि (देकार्त की विधि) से हटकर चेतन अनुभव द्वारा सत्य को प्राप्त करने की पद्धति का प्रारम्भ किया। इसने एक नये आन्दोलन (अनुभववाद) को प्रारम्भ किया। वह इस पर अडिग रहे कि हमारे सभी प्रत्यय अन्ततः चेतन अनुभव से आते हैं। मन सरल प्रत्ययों को जोड़कर अधिक जटिल प्रत्ययों को उत्पन्न करता है। उदाहरण स्वरूप, 'श्वेत', 'ठोस', 'ऊँचा' और 'सपाट' की इन्द्रिय संवेदना एकत्रित होकर श्वेत दीवार का प्रत्यय बना सकती हैं।

लॉक ने अर्थशास्त्र और राजनीतिशास्त्र पर भी महत्वपूर्ण टिप्पणी लिखीं और धार्मिक सहिष्णुता के पक्ष में तर्क दिये। यह 17वीं शताब्दि में अनूठा प्रकरण था। वह ऐसे पहले विचारक ये जिन्होंने तर्क दिया कि मानवों में अधिकारों की मूल धारणा होती है। इस विचार ने धीरे धीरे 'मानव अधिकार' की आधुनिक समझ को निर्मित किया।

सर आइजक न्यूटन (1642–1727) अब तक के महानतम वैज्ञानिकों में गिने जायेंगे। दो वर्ष (1665–67) से कम समय में उन्होंने गणित की नवीन शाखा, जो कि कलन (calculus) के नाम से जानी जाती है, का आविष्कार किया, श्वेत प्रकाश विभिन्न रंगों का मिश्रण है कि खोज की और गुरुत्वाकर्षण के सार्वभौमिक नियमों की खोज की। वह अपने गति के तीन नियमों के लिए भी जाने जाते हैं यद्यपि, वह शोध में अधिक रूचि रखते थे न कि प्रसिद्धि में इसलिये उन्होंने तब तक खोजों को प्रकाशित करने पर ध्यान नहीं दिया जब तक कि उनके मित्र एडमन्ड हैली (धूमकेतु का आविष्कारक) ने उन्हें 1967 में *प्रिन्सिपिया मेथेमेटिका* नामक शीर्षक की पुस्तक में ऐसा करने के लिये प्रेरित नहीं किया। उनकी वैज्ञानिक विधि, जो कि आज 'शास्त्रीय भौतिकी' के नाम से जानी जाती है, को तब तक चुनौती नहीं दी जा सकी जब तक कि बीसवीं शताब्दी में क्वान्टम सिद्धांत (Quantum Theory) और सापेक्षता का सिद्धांत (Theory of Relativity) का आगमन नहीं हो गया।

गाट्टफ्राइड लाइबनित्स (1646–1716) एक जर्मन बुद्धिवादी जो कई विषयों में पारंगत थे उन्होंने यंत्रशास्त्र, पुस्तकालय विज्ञान, गणित, तर्कशास्त्र, भौतिकी, भाषा–विज्ञान, इतिहास, सौंदर्य शास्त्र और राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में विलक्षण योगदान दिया। पुस्तकालय वर्णक्रम सूची की आधुनिक पद्धति उनके द्वारा प्रकाश में आयी। एक दार्शनिक के रूप में, यह देकार्त और स्पिनोजा की शिक्षाओं से प्रभावित थे लेकिन उसने दोनों के मध्य और अनेक दर्शनों और धर्मों के मध्य एकता के निर्माण की इच्छा रखी। परिणाम स्वरूप, उनकी प्रसिद्ध मोनड (चिदणु) की दार्शनिक अवधारणा प्रकाश में आयी। यद्यपि, मोनड परमाणु के समान द्रव्य की सबसे छोटी इकाई है, लेकिन द्रव्य के भूत और अविष्य को भी धारण किए रहती हैं। इसकी बुद्धिवाद खण्ड में विस्तृत रूप में चर्चा की जायेगी।

जार्ज बर्कले (1685–1753) एक 18वीं शती का आयरलैण्ड (अंग्रेज) का विशेष और अनुभव पर निर्भर रहने वाला दार्शनिक था। वह इस कथन कि 'अनुभूति ही सत्य/विषय है' (एससे ऐस्ट प्रसिपि) के लिए प्रसिद्ध थे। दूसरे शब्दों में, जो अनुभूत नहीं है वह वास्तविक रूप से अस्तित्व में नहीं है। यह दर्शन अभौतिकवाद के रूप में जाना जाता है। बर्कले के लिए हमारे विश्व के भौतिक पदार्थ प्रत्यय मात्र हैं। इसलिए उन्होंने पदार्थ के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया।

चार्ल्स लुइस डि सेकोन्डेट (1689–1755) मांटेस्क्यू के नाम से जाने जाते हैं। वह फ्रांसीसी अन्वेषक राजनीतिक विचारक और मानव स्वतंत्रता के महान समर्थक थे। अपनी पुस्तक द स्प्रिट ऑफ द लॉ, में उन्होंने शासन के विभिन्न प्रकारों जैसे कि गणतंत्रीय, राजतंत्रीय और निरंकुश राज्य का विश्लेषण किया। उन्होंने सिद्ध किया कि सबसे अच्छी सरकार वह होगी जिसमें सरकार की तीन शक्तियाँ, यथा विधायी, कार्यकारी और न्यायिक, एक दूसरे से पृथक रहें। उनके दृष्टिकोण ने कई देशों के संविधान, भारत सहित, को प्रभावित किया।

फ्रांकोइस–मेरी एराउट (1694–1778), एक प्रसिद्ध फ्रांसीसी विचारक, जो अपने लिखने वाले नाम वाल्टेअर के रूप में अधिक जाने जाते है, थे। वह एक ऐसे आस्तिक थे जो ईश्वर में तो विश्वास करते थे लेकिन किसी विशेष धर्म में नहीं। उन्होंने मुक्त व्यापार, धार्मिक अहिष्णुता, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के तीन सिद्धांतों का सशक्त समर्थन किया। उन्होंने अनुभव किया कि केवल इन्हीं के द्वारा विकास और संपन्नता प्राप्त की जा सकती है। यद्यपि, उन्होंने स्वयं राजतंत्र के दृष्टिकोण का समर्थन किया। उनके राजनैतिक विचारों ने फ्रांसीसी क्रांति को अत्यधिक प्रभावित किया।

डेविड ह्यूम (1711–1776) स्कॉटलैण्ड के प्रबोधन का प्रसिद्ध दार्शनिक थे। यद्यपि, वे ध र्मिक परिवार में पैदा हुए किन्तु धीरे–धीरे वह नास्तिक बन गये। उन्होंने 29 वर्ष की अवस्था में *ए ट्रिटीज ऑफ ह्यूमन नेचर* को प्रकाशित किया। धार्मिक विश्वास पर सीधे आक्रमण करने के लिए उनके लेख प्रसिद्ध हैं। उनका यह दार्शनिक दावा कि मानव निश्चित रूप से यह कभी नहीं जान सकता कि एक घटना दूसरी घटना का कारण होती है। इस संशयवादी दावे के द्वारा, उन्होंने समस्त मानव ज्ञान को खोद डाला।

जीन–जैकस रूसो (1712–1778) जिनेवा में पैदा हुए लेकिन फ्रांस में बस गये। वह उन दार्शनिकों में से थे जिन्होंने फ्रांसीसी क्रांति के लिए आधार बनाया। उन्होंने अपने महत्वपूर्ण कार्य *द सोशियल कान्ट्रेक्ट* में तर्क किया कि मानव प्राकृतिक रूप से एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा में रहते हैं और इसलिए वे आपस में मिलकर समुदाय बनाते हैं जिससे कि वे संघर्ष में लाभप्रद स्थिति की सम्भावना के साथ खड़े हो सकें। रूसो मानते हैं 'कि सामाजिक संविदा आधुनिक सभ्यता और समाज का आधार है। उन्होंने निजी सम्पत्ति की धारणा की आलोचना की क्योंकि यह असमानता उत्पन्न करती है। उन्होंने, स्वतंत्रता, समानता और सभी के लिए न्याय का पक्ष लिया।

इमैनुअल काण्ट (1724–1804) प्रबोधन के संभवतः सबसे प्रभावशाली दार्शनिक थे। उन्होंने दावा किया कि हम यह कभी नहीं जान सकते कि द्रव्य स्वयं में कैसे हैं। हम विषयों का केवल प्रतिभासिक रूप ही जान सकते हैं। इस प्रकार, वह दर्शन में एक 'कॉपरनिकस क्रांति' ले आये क्योंकि उनका बड़ा परिज्ञान यह था कि ज्ञान द्रव्य के बाह्य संसार की प्रकृति से निश्चित नहीं होता बल्कि मानव बुद्धि की प्रकृति से निश्चित होता है। चिन्तन के इस ढंग ने अनेक दार्शनिक समस्याओं पर विमर्श को निर्धारित किया और जर्मन दर्शन में प्रत्ययवाद के उदय को जन्म दिया। काण्ट के कुछ प्रसिद्ध शिष्य फिक्टे, शेलिंग और हेगेल थे जो अपने आप में महान दार्शनिक थे।

3.4 पाश्चात्य दर्शन के लिए प्रबोधन का महत्व

प्राचीन दर्शन जीवन के विभिन्न सैद्धांतिक और प्रयोगिक आयामों को निर्देशित करने वाली प्रज्ञा में अधिक रूचि रखता था। मध्यकालीन दर्शन ऐसी प्रज्ञा में रूचि रखता था जो जीवन को दैविक वास्तविकता के साथ मेल में संचालित करती थी। इन दोनों तरीकों से अलग आधुनिक दर्शन अपनी विधियों और लक्ष्यों में कहीं अधिक आडम्बरहीन था। यह मूलतः ज्ञानमीमांसा; प्रकृति, सृष्टि और मानव ज्ञान की सीमा को जानने सम्बंधि दार्शनिक अन्वेषण से सम्बंधित था। बाद में यह खोज समस्त अन्य सैद्धांतिक और प्रायोगिक अन्वषणों का आधार समझी गयी।

ऐसा इसलिए था क्योंकि प्रबोधन ऐसा काल था जब न तो आध्यात्मिक सत्ता (मूल ग्रन्थ, प्रमुख विचारक और चर्च के नेता), और न ही दार्शनिक सत्ता (मूलग्रन्थ और प्राचीन और मध्यकालीन दर्शन के प्रमुख विचारक) को महत्व दिया गया। इसके स्थान पर, निश्चित सत्य प्राप्ति के लिये बिना किसी धार्मिक और दार्शनिक पूर्व मान्यता की अपेक्षा ज्ञान की खोज के लिये शुन्य से प्रारम्भ किया गया।

देकार्त को इसलिये आधुनिक दर्शन का पिता कहा जाता है क्योंकि वह यह निर्णय करने वाला कि प्रभुत्व और परम्पराओं के तर्कों को स्वीकार करने की अपेक्षा वह अपनी तर्क करने की शक्ति पर निर्भर रहते हुए निश्चित तथ्यों को प्राप्त करेगा प्रथम आधुनिक दाशर्निक था। शुन्य से प्रारम्भ करते हुए वह एक निश्चित सत्य 'मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ' पर पहुँचा। इसके आधार पर वह अन्य कई महत्वपूर्ण निष्कर्षों पर पहुंचने में सफल रहे।

अवश्य ही, शुन्य से आरम्भ करने की स्थिति सरल एवं सम्भव नहीं थी क्योंकि उस समय के ढ़ेर सारे विचारक अपनी सांस्कृतिक, दार्शनिक और धार्मिक परम्पराओं से प्रभावित थे। फलतः, उनकी पद्धतियां और निष्कर्ष उतने निरपेक्ष नहीं थे जितने वे उन्हें स्वयं समझते थे। वस्तुतः बुद्धिवादीयों (देकार्त, स्पिनोजा, लाइबनित्स) का विश्वास था कि मन और उसके विभाग अधिक से अधिक विश्वसनीय मानवीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए पूर्णतः उत्तरदायी हैं। दूसरी ओर, केवल अनुभव पर निर्भर रहने वालों (लॉक, बर्कले, ह्यूम) का विश्वास था कि इन्द्रियां और उनकी शक्तियाँ प्रमुख रूप से मानव के वास्तविक ज्ञान के लिए उत्तरदायी हैं।

यह जर्मन दार्शनिक इमैनुअल काण्ट थे जिन्होंने इन दोनों स्थितियों में संधि कराते हुए दावा किया कि ज्ञानोत्पत्ति में मन सप्रत्यय अथवा कोटियां उत्पन्न करता है और इन्द्रियाँ आवश्यक 'प्रत्यक्ष' या 'संवेदना', जो कोटियों को संवेदन रूपी कच्ची सामग्री से भरती हैं, उत्पन्न करती है। काण्ट ने पूर्ण समकालीन दर्शन को एक बड़े स्तर पर प्रभावित किया। उनके अनुसार, मानव मन के सम्प्रत्यय सभी में समान हैं तथापि वे हमें वस्तु–सत को जानने की अनुमति नहीं देते। हम सत् को केवल मानव मन के सम्प्रत्ययों की सीमा तक ही जानते हैं।

काण्ट के उपरान्त अनेक दार्शनिकों ने संदेह व्यक्त किया कि क्या हम वास्तव में तात्विक–सत्यता का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, काण्ट के समय से ही दर्शन ने स्वयं को तात्विक प्रश्नों जैसे कि स्वर्ग आदि, से परे कर लिया और उसके स्थान पर मानव और सामाजिक समस्याओं पर आधारित प्रश्नों पर केन्द्रित कर लिया।

काण्टवाद के इस प्रभाव के परिणाम स्वरूप समकालीन पाश्चात्य दर्शन ने बड़े स्तर पर उन प्रकरणों पर ध्यान आकर्षिक किया जो मानव अस्तित्व, वैज्ञानिक ज्ञान, भाषा, संचार, सामाजिक संरचना और इसी प्रकार की अन्य मानव समस्याओं से संबंधित थे। प्राचीन और मध्यकालीन दर्शन के वृहद और समस्त को गले लगाने वाले दृष्टिकोण को आधुनिक और समकालीन दर्शन द्वारा अधिक संकुचित विषयों, जैसे ऐसी समस्याएं जिनमें लोग व्यक्तिगत, अन्तरव्यक्तिगत और सामाजिक सरोकारों का सामना करते थे, द्वारा स्थानांतरित कर दिया गया।

सामाजिक राजनीतिक मोर्चे पर, शुन्य से प्रारंभ होने वाली केवल बुद्धि आधारित प्रवृत्ति के प्रयोग ने अनेक राजाओं की सत्ता को ध्वस्त कर दिया और अनेक राष्ट्रों में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को शिखर पर पहुँचा दिया।

यद्यपि, विश्व के अधिकतर भागों में अभी भी सांस्कृतिक परंपराओं और धार्मिक अधिकारियों का प्रभाव था किन्तु समकालीन यूरोपियन चेतना–प्रबोधन से अत्यधिक प्रभावित–विवेक की शक्ति, वैज्ञानिक प्रदर्शन, और लोकतांत्रिक सामाजिक सहमति से प्रभावित थी। इन सबने समाज की रचना में सहयोग दिया। इस प्रकार, प्रबोधन ने तत्कालीन यूरोपियन संस्कृति को आकार दिया और इसे ऐसी पहचान दी जो शेष संसार से अत्यंत भिन्न थी।

निष्कर्षतः, यह कहा जा सकता है कि प्रबोधन काल ने आधुनिक यूरोप की चेतना और सामाजिक संरचना को व्यापक रूप में परिभाषित किया। यह दार्शनिक बौद्धिक क्रांति (आधुनिक दर्शन का जन्म और काण्ट की 'कापरनिकस क्रांति'), वैज्ञानिक और तकनीकी क्रांति, औद्योगिक क्रांति (इंग्लैण्ड) और इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमेरिका में राजनैतिक क्रांति के द्वारा हुआ।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणी :

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) प्रबोधन काल के बड़े विचारकों के उदाहरण और उनका योगदान बताओ।

.....

.....

.....

.....

2) प्रबोधन किस प्रकार पाश्चात्य दर्शन के संदर्भ में महत्वपूर्ण था?

.....

.....

.....

.....

3.6 सारांश

'आधुनिक पाश्चात्य दर्शन' का सामान्यतः प्रबोधन के नाम से प्रचलित संस्कृति से निकट का सम्बन्ध है। इस इकाई ने आधुनिक दर्शन के गहन अध्ययन के लिए, प्रबोधन की आधारभूत अन्तरदृष्टि से तथा और अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं और इस समय के प्रचलित व्यक्तियों से परिचय कराया है। यहां पर हमने कुछ ज्वलंत समस्याओं और उसय काल में यूरोपियन चेतना से प्रभावित संबंधित क्षेत्रों पर भी चिन्तन किया। अन्ततः, हमने प्रबोधन के उन सभी पक्षों

(महत्वपूर्ण घटनायें और विकास, प्रमुख समस्यायें और प्रकरण, विशिष्ट व्यक्तित्व), जिन्होंने पाश्चात्य दर्शन के विकास पर प्रभाव छोड़ा, का अध्ययन किया।

प्रबोधन से सम्बन्धित निम्नलिखित प्रमुख बिन्दुओं को समझो और याद करो :

- 'प्रबोधन' (18वीं शती) बुद्धि के युग (17वीं शती) के उपरान्त आया। लेकिन अधिक सामान्य रूप से कहें तो प्रबोधन को 17वीं और 18वीं शती (1600–1800) को समहित करते हुए समझा जा सकता है क्योंकि इस समय में बुद्धि का विस्तृत प्रयोग दार्शनिक और वैज्ञानिक तर्कों में न कि आस्था और सांस्कृतिक परम्परा में अत्यधिक किया गया।

> ***आओ विचार करें –II***
>
> इंग्लैण्ड, फांस और अमरिकी क्रान्तियों के दौरान और बाद की घटनाओं को याद कीजिए। लोकतंत्र और लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में इन क्रान्तियों की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

- 'प्रबोधन' काल व्यापक स्तर पर पाश्चात्य दर्शन का वह काल है जिसे 'आधुनिक दर्शन' के नाम से जाना जाता है। आधुनिक दर्शन प्रकृति की समस्याओं, ज्ञान की सीमा और श्रोतों (ज्ञानमीमांसा) से मुख्यतः सम्बन्धित है।
- पुनर्जागरण काल में, सामाजिक विकास का अनुभव व्यापक स्तर पर धनी, शक्तिशाली और शिक्षित व्यक्तियों द्वारा किया गया। लेकिन, प्रबोधन काल में, सामाजिक विकास का आनन्द जनता के अत्यधिक बड़े वर्ग द्वारा उठाया गया।
- इस काल ने इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमेरिका से प्रारम्भ हुए लोकतंत्र का तीव्र विकास, देखा। लोकतंत्र के विकास ने स्वतंत्रता और समानता के मूल्यों को यूरोप और 'नयी दुनिया' (उत्तरी अमेरिका) में दृढ़ करने में सहायता की।
- इस काल ने औद्योगिक क्रांति को उत्पन्न किया क्योंकि वैज्ञानिक खोजों और आविष्कारों से उत्पन्न तकनीकी अनुपययोग के कारण और सम्पूर्ण विश्व में अनेक यूरोपियन उपनिवेशों से व्यापार के बढ़े अवसरों के कारण इस काल ने औद्योगिक क्रांति को उत्पन्न किया।

3.7 कुंजी शब्द

प्रबोधन : यूरोपिय सांस्कृतिक इतिहास का वह काल जो 17वीं शताब्दी में आरंभ हुआ और 18वीं शताब्दी में उस समय चरमोत्कर्ष पर पहुँचा, जिस समय बुद्धि (न कि सांस्कृतिक, धार्मिक, और दार्शनिक परम्परा) को ज्ञान प्राप्त करने के मुख्य एवं वैध स्रोत के रूप में स्वीकार किया गया। यह विज्ञान, दर्शन और राजनीति के अत्यधिक विकास का काल था।

आगमन विधि : यह नवीन ज्ञान को पूर्व स्थापित सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रयोग और निरीक्षण के द्वारा प्राप्त करने की विधि है। यह शोधकर्ता को त्रुटिपूर्ण सिद्धांतों को, यह देखकर कि वे निरीक्षण किये गये तथ्य से मेल खाते हैं कि नहीं, छोड़ने की अनुमति देती है। एक विधि के रूप में इसकी विस्तृत व्याख्या फ्रांसिस बेकन द्वारा 1620 में की गयी थी। यह वैज्ञानिक शोध और वैज्ञानिक विकास में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुई, क्योंकि इससे अनेक नयी खोजें और आविष्कार हुए।

औद्योगिक क्रांति : यह 18वीं शती के अंत और 19वीं शती के आरंभ का वह काल था जब खनन, कृषि, परिवहन और तकनीकी विकास के अन्य क्षेत्रों में बड़े परिवर्तन हुए। इन परिवर्तनों ने जीवन को अधिक सक्षम, सुखदायक और शारीरिक रूप से कम तनावपूर्ण इसलिये बनाया क्योंकि मशीनों ने मानव का कार्य करना आरंभ कर दिया था। इन औद्योगिक परिवर्तनों ने ब्रिटेन में आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति को परिवर्तित कर दिया और इस प्रकार पूरे विश्व में सामाजिक परिवर्तन हुआ।

लोकतंत्र : सरकार का एक स्वरूप 'लोगों का, लोगों के द्वारा और लोगों के लिएश, शासन। इसमें नागरिकों के पास राज्य को चलाने का अधिकार होता है, और वे इस अधिकार का प्रयोग बहुमत के नियम द्वारा करते हैं। लोकतन्त्र के लिये अंग्रेजी शब्द डेमोक्रेसी (Democracy) डेमोस (demos) अर्थात व्यक्ति और क्रांटोस (kratos) अर्थात (शक्ति) से लिया गया है।

आधुनिक लोकतंत्र, प्राचीन समय में प्रयुक्त लोकतंत्र से सर्वथा भिन्न है, क्योंकि यह लोगों के अधिक से अधिक वर्गों को शक्ति देता है, भूतकाल की तरह समाज के केवल कुछ विशेष वर्गों को नहीं।

3.7 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

ब्रिन्टोन, क्रेने, "इन्लाइटनमेन्ट'', इन *द एन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफी*, वोल्यू–2, (एडि.) पॉल एडवर्डस, न्यूयार्क एण्ड लन्दन, कोलियर मेक्मिलिन पब्लिसर्स, 1967, 519–25.

कापलस्टॉन, फ्रेडरिक, *ए हिस्ट्री ऑफ फिलोसोफी*, वोल्यू–4–6, लन्दन, बनर्स ओएटेस एण्ड वासबोर्न लिमि., 1958–61.

डुरेन्ट, विल एण्ड ऐरियल डुरेन्ट, *द स्टोरी ऑफ सिविलाइजेसन*, वोल्यू–7–10, न्यूयार्क, सिमोन एण्ड सुस्टेर, 1961–67.

शेमिट, जे., (एडि.) *व्हाट इज इन्लाइटन्मेन्ट? ऐटीन–सेन्यूरी आन्सरस एण्ड टुवेन्टींथ सेन्चुरी क्वेस्चनस*, बर्कले, यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोरनिया प्रेस, 1996.

वाकर, रॉबर्ट, "इन्लाइटनमेन्ट, कान्टिनेन्टल', इन *राउटलेज एन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफी*, वोल्यू–3, (एंडि.), एडवर्ड क्रेग, लन्दन एण्ड न्यूयार्क, राउटलेज, 1998, 315–20.

वाटसन, पीटर, *आइडियास : ए हिस्ट्री फ्रोम फायर टु फ्रायड*, लन्दन, वाइडन फिल्ड एण्ड निकॉलसन, 2005.

चालटन, जे.डब्ल्यू.आर. पोस्टर, पी. रोजरस एण्ड बी.एम. स्टाफोर्ड, (एडि.), *द ब्लेकवेल कम्पेनियन टु द इन्लाइटनमेण्ट*, लन्दन, ब्लैकवेल, 1991.

महत्वपूर्ण वेबसाइटस :

इन्लाइटेन्मेन्ट मूल स्रोत : www.historywiz.com/enlightenmentsources.htm

इन्टरनेट मॉर्डन हिस्ट्री सोर्सबुक : द इन्लाइनमेन्टः www.fordham.edu/halsall/modsbook10.html

द इन्टरनेट एन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफीः www.iep.utm.edu

द स्टेनफोर्ड एन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफीः plato.stanford.edu

द मेटा ऐन्साइक्लोपिडिया ऑफ फिलोसोफीः www.ditext.com/encyc/frame.html

3.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न

1) प्रबोधन यूरोप के सांस्कृतिक इतिहास का वह काल था जो 17वीं शती में आरंभ हुआ और 18वीं शती में अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँचा। इस समय में, यूरोप का अपने परम्पराबद्ध भूतकाल से सामान्य जागरण ऐसे भविष्य के पक्ष में हुआ था जो बुद्धि, वैज्ञानिक, और जिक विकास से संचालित था। यह एक ऐसा काल था जब ज्ञान और दर्शन मात्र कुछ विद्वानों तक ही सीमित नहीं था बल्कि सामान्य मानवों में व्यापक रूप से प्रसारित हो गया था। इसने महत्वपूर्ण बौद्धिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक क्रांतियों को जन्म दिया।

2) प्रबोधन काल की कुछ सबसे प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएं निम्नलिखित हैं :

1620 फ्रांसिस बेकन के नोवम आरगनन ने अनेक उदाहरणों द्वारा आगमन पद्धति पर आधारित तर्कशास्त्र की एक नवीन पद्धति प्रस्तुत की।

1632 गैलिलियो गैलिली ने अपनी पुस्तक डायलांग आन द टू चीफ सिस्टम ऑफ द वल्ड में कॉपरनिकस के सिद्धांत के पक्ष में तर्क प्रस्तुत किये। इस पुस्तक ने उन्हें चर्च के साथ विवाद में ला दिया।

1641 देकार्त के मेडिटेसन का प्रकाशन।

1687 सर आइजक न्यूटन से प्रिंसपिया मैथमेटिका प्रकाशित किया।

1688–89 इग्लैण्ड में स्टूअर्ट राजवंश को उतार फेंका गया और ओरेंज के विलियम मान (निदरलैण्ड से) को सम्राट बनने के लिए आमन्त्रित किया गया। 'अधि कारों की घोषणा' के द्वारा संवैधानिक सरकार की स्थापना की गयी।

1751–72 डिडराट की एनसाइक्लोपिडीया (महत्वपूर्ण विचारकों द्वारा प्रबोधन के आदर्शों को प्रोत्साहित करने के लिए एक बहुग्रन्थी व्याख्या) का प्रकाशन।

1756–63 सात वर्ष का युद्ध; फ्रांस ने भारत और कनाडा पर अपना प्रभाव खो दिया।

1775–83 अमेरीकी स्वतंत्रता का युद्ध।

1781 इमैनुअल काण्ट ने ए क्रिटिक ऑफ प्योर रीजन प्रकाशित किया। आस्ट्रिया के सम्राट जोसेफ ने जमीनदारों को स्वतंत्र कर दिया।

1789–93 फ्रांसीसी क्रांति

बोध प्रश्न 2

1) प्रबोधन ने वैज्ञानिक संस्कृति का जन्म देखा, जिसने पुनः अनेक तकनीकी आविष्कारों को जन्म दिया। अन्तिम सत्ता आधारित तर्क का प्रभाव कम होने लगा और बुद्धि और अनुभववादी प्रमाण ज्ञान के श्रोत के रूप में अधिक महत्वपूर्ण हो गये। इसी समय, अनेक सामाजिक परिवर्तन हुए, परिणाम स्वरूप नये उभरते हुए मंच पर लोग अधिक पढ़ने और विभिन्न प्रकरणों पर चर्चा करने लगे। अन्ततः इस विश्वास कि मानव में मूल अधिकार की अवधारणा प्राकृतिक रूप से होती है ने स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र सम्बंधी आधुनिक राजनैतिक विचारों को जन्म दिया।

2) पुनर्जागरण एवं प्रबोधन के मध्य निरन्तरता निम्न है :

अ) दर्शन और धर्म का अलगाव जारी रहा।

ब) विवेक और अनुभव की शक्ति को माना गया न कि धार्मिक सत्ता को।

स) शिक्षा, सीखना और पढ़ने का धीरे–धीरे फैलाव होता रहा।

पुनर्जाकरण और प्रबोधन में भिन्नता निम्न है :

अ) पुनर्जागरण ने शास्त्रीय युक्तियों को जीवित करने का लक्ष्य बनाया जबकि प्रबोधन ने भूत से प्राप्त लक्ष्यों से आगे विकास करने का उद्देश्य बनाया।

ब) पुनर्जाकरण ने समाज के कपिपय भागों में सांस्कृतिक परिवर्तन किये जबकि प्रबोधन ने पूर्ण समाज, सामान्य और साधारण लोगों के दिन–प्रतिदिन के जीवन को प्रभावित किया।

स) पुनर्जागरण कला और मानविकी से प्रभावित था, जबकि प्रबोधन विज्ञान और तकनीक से प्रभावित था।

बोध प्रश्न 3

1) प्रबोधन के कुछ सबसे महत्वपूर्ण विचारक थे :

अ) रेने देकार्त; इन्होंने धार्मिक सत्ता, परम्पराओं से स्वतन्त्र दर्शन पर कार्य किया।

ब) सर आइजेक न्यूटन; इन्होंने गुरुत्वाकर्षण के सार्वभौमिक नियमों, गति के तीन नियमों की खोज की। ये और उनकी खोजों ने विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में क्रांति करने में सहायता की।

स) मांटेस्क्यू, वाल्टेयर और रूसो; इन्होंने प्रबोधन के विचारों को फ्रांस में बढ़ाया, जिसने अन्ततः फ्रांसीसी क्रांति को जन्म दिया।

द) इमैनुअल काण्ट; ये दर्शन में दार्शनिकों के ध्यान को वस्तु जगत से हटाकर विषयी/ज्ञाता की ओर मोड़कर 'कोपरनिकन क्रांति' को लेकर आये।

2) प्रबोधन निम्नलिखित कारणों से महत्वपूर्ण था :

अ) दर्शन में प्रत्यक्ष अनुभव और तर्क द्वारा नवीन आरंभ हुआ न कि परमसत्ता या परम्परा से।

ब) दार्शनिक अभिरुचि में तत्वमीमांसा से ज्ञानमीमांसा की ओर झुकाव आया। ज्ञानमीमांसा बाह्य जगत से हटकर ज्ञाता के सम्प्रत्ययों और विभागों की ओर मुड गई।

स) वैज्ञानिक, औद्योगिक, और राजनीतिक क्षेत्र में अनेक परिवर्तनों ने मानव क्षमता और मानव विकास में नया विश्वास उत्पन्न किया। इससे यूरोप में धीरे–धीरे धर्म निरपेक्षता का आगमन हुआ। अब, व्यवहारिक रूचियां आध्यात्मिक रूचियों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हो गई। इस प्रकार, दार्शनिक क्षितिज अधिक मानववादी और धर्म निरपेक्ष हो गया।